चन्दामामा
जनवरी १९७५
1 Re

Photo by: I. UMA RANI

DAHLIA

मैं गंदे पैरों से भला प्लूटो को अन्दर कैसे लाता?
HT-HSI 8124 R
अन्तर्राष्ट्रीय गुणमान के अनुरूप निर्मित सैनेटरीवेयर और वॉल टाइल
VITREOUS
हिन्दुस्तान सैनेटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड
२ वेलेसली प्लेस, कलकत्ता ७०००१
सोमानी-पिलकिंगटन्स लिमिटेड
कसार, रोहतक, हरियाना

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

इस महीने की बेताल कथा "खजाने का चोर" पूर्ण रूप से मानसिक तत्वों पर आधारित कहानी है। "राजगुरु", "दो मंत्री", "यथा राजा तथा प्रजा" नामक कहानियों में भिन्न प्रकार की राजनीति चित्रित है। राजा के लिए तात्विक दृष्टिकोण उपयोगी नहीं है। राजकीय दायित्व रखनेवालों को दर्प शोभा नहीं देता। राजा क़ानून की अपेक्षा अपने वैयक्तिक आचरण द्वारा जनता में परिवर्तन ला सकता है।

वर्ष : २७ जनवरी १९७५ अंक : ७

मित्र-भेद

[१८]

संजीवक की बातें सुन दमनक ने अपने मन में सोचा–"यह पर्याप्त शक्ति रखता है। इसके तेज सींगे हैं। क़िस्मत ने साथ दिया तो यह युद्ध में मेरे मालिक का वध कर सकता है। मगर ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। इसलिए इसके मन को युद्ध से विमुख बना देना चाहिए।" फिर प्रकट रूप में बोला–"मित्रवर! सामनेवाले की शक्ति का अंदाज़ लगाये बिना युद्ध के लिए सन्नद्ध होना उचित नहीं है। तुम जैसे बैल का पिंगलक जैसे सिंह के साथ जूझकर विजयी होना क्या संभव है? इसके लिए बलवानों की सहायता की आवश्यकता है। पुराने जमाने में इसी प्रकार टिटिहरी पक्षी समुद्र पर विजय पा सका है।"

"वह कैसी कहानी है?" संजीवक ने दमनक से पूछा। दमनक ने यों सुनाई:

समुद्र पर विजय पानेवाला टिटिहरी पक्षी

एक महासागर के तट पर टिटिहरी पक्षी का जोड़ा था। मादा टिटिहरी गर्भवती थी। उसने अण्डे देने के लिए योग्य स्थान ढूंढ़ने का नरपक्षी से अनुरोध किया।

"हम जिस समुद्र के किनारे रहते हैं, इसी के तट पर अण्डे दो। यह स्थान हमारे चिरकाल का निवास है।" नरपक्षी ने समझाया।

"नहीं, समुद्र तो हमारे बहुत ही निकट है। इसमें जब-तब ज्वार-भाटे हुआ करते हैं। समुद्र में उफान आने पर मेरे अण्डे बह जायेंगे।" मादा पक्षी ने कहा।

अंतिम पृष्ठ का चित्र

"पगली! समुद्र मेरे साथ इस प्रकार अन्याय करने का साहस न कर सकेगा। वह मेरी ताक़त से भलीभांति परिचित है। समुद्र के भीतर असंख्य मछलियाँ, मगर-मच्छ, कछुए तथा अन्य प्राणी सुखपूर्वक जी रहे हैं, ऐसी हालत में क्या वह ऐसा साहस कार्य कर बैठेगा?" नरपक्षी ने कहा।

मादा पक्षी अपने पति की सामर्थ्य से परिचित थी, इसलिए वह बोली–"इस प्रकार दंभ करके अपमानित मत हो जाओ। क्या तुम अपनी शक्ति से परिचित नहीं हो? मेरी वाचलता के ही कारण तो कछुए का विनाश हुआ?"

"सो कैसे?" नरपक्षी ने पूछा।

मादा पक्षी ने कछुए की कहानी यों सुनाई: एक तालाब में कंबुग्रीव नामक एक कछुआ था। संकट और विकट नामक दो बक उसके दोस्त थे। थोड़े दिन बाद पानी का अकाल आया और तालाब सूखने लगा। इसलिए बक एक दूसरे तालाब में जाने का निश्चय करके यह बात अपने मित्र कछुए से बोले।

"तुम लोगों से ज्यादा मुझे पानी की ज़रूरत है, पानी के बिना मैं जी नहीं सकता। अतः मुझे यहाँ से ले जाने का उपाय सोंच लो।" कछुए ने पूछा।

"तुम उड़ नहीं सकते! हम कर ही क्या सकते हैं? तुम्हारी क़िस्मत में यही लिखा हुआ है। इसलिए यहीं रह जाओ।" बकों ने बताया।

तीनों ने बड़ी देर तक सोचा-विचारा। तब कछुए के मन में एक उपाय सूझा। वह यह था कि एक लकड़ी लाकर उसके दोनों छोरों को बक अपनी चोंचों से पकड़ ले तो लकड़ी के मध्य भाग को कछुआ अपने मुँह से पकड़ लेगा, तब बक उड़ते हुए कछुए को भी अपने साथ ले जा सकते हैं।

बकों ने समझाया कि यह तरीका बड़ा ही खतरनाक है। रास्ते में कछुआ बोलने

का प्रयत्न करेगा तो वह नीचे गिरकर मर जाएगा। कछुए ने शपथ खाई कि वह रास्ते में भूलकर भी अपना मुंह न खोलेगा। इसके बाद बक एक लकड़ी के टुकड़े को ले आये। उसके मध्य भाग को कछुए ने अपने मुंह से पकड़ लिया। बक लकड़ी के दोनों छोरों को अपनी चोंचों से दबाये थोड़ी ही ऊंचाई पर उड़ चले।

जब बक एक गांव के ऊपर से उड़ रहे थे तब गांववालों ने बक तथा कछुए को देख मजाक़ उड़ाया। कछुए को क्रोध आया। वह अपना मुंह खोल बोलने को हुआ–"ये लोग ज़रा भी तमीज़ नहीं रखते।" मगर अपनी बात पूरी होने के पहले ही कछुआ नीचे गिर पड़ा। गांववालों ने उसे मारकर खा डाला।

मादा टिटिहरी ने कछुए की कहानी सुनाकर यों कहा–"जंगल के बीच एक तालाब में अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमती तथा यद्भविष्यती नामक तीन बड़ी मछलियों के बीच मैत्री थी। एक दिन कुछ मछुए उस तालाब से होकर जाते हुए आपस में कहने लगे–'इस तालाब में बड़ी-बड़ी मछलियां हैं। कल आकर पकड़ लेंगे।' ये बातें अनागतविधाता ने सुन लीं। उसने घबराकर अपने मित्रों से कहा–'हम किसी दूसरे तालाब में जायेंगे।'

प्रत्युत्पन्नमती ने मुस्कुराकर कहा–"होनेवाली बात को लेकर हम पहले ही क्यों घबरावे? मैं बहुत समय से यहां पर सुखी हूँ। अनेक खतरों से मैं युक्ति के साथ बच गयी हूँ। संभवतः मछुए नहीं आयेंगे! अगर आ भी गये तो मैं युक्ति के साथ अपने को बचा सकती हूँ।" यद्भविष्यती ने भी कहा–"मैं भी यहां से जाने का विचार नहीं रखती, मानों और कहीं मछलियां न हों और मछुए इस कोने में स्थित तालाब में ही क्यों कर आवेंगे? अगर हमारे भाग्य में यही लिखा हुआ हो तो इससे कौन बच सकता है?" ये बातें सुन अनागतविधाता दूसरे तालाब में चली गई।
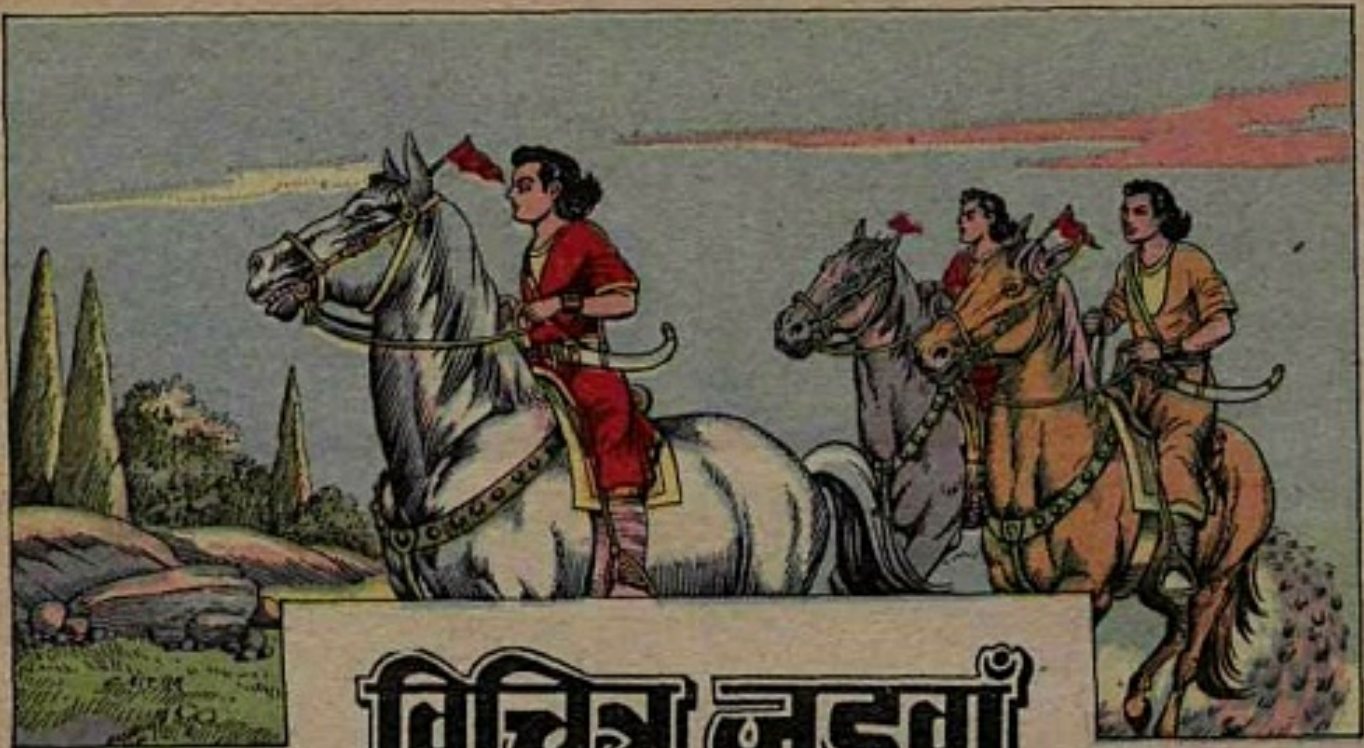
विचित्र जुड़वाँ

[६]

[तीनों जुड़वों को गीध उठा ले गये। इस पर राजा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि राजकुमारियों को लाकर सौंपनेवाले को अपना राज्य दिया जाएगा। ढिंढोरा सुनकर भद्रपुरी के तीन जुड़वें भाई उदयन, निशीथ और संध्याकुमार राजा की सेवा में पहुँचे। राजा से घोड़े पाकर राजकुमारियों की खोज में चल पड़े। बाद–]

सफ़ेद घोड़े पर उदयन आगे जा रहा था। दिन का वक़्त था, इसलिए उसे कोई कठिनाई न थी। लेकिन संध्या कुमार तथा निशीथ की बात क्या थी? सुनिये; वे आँखें रखते हुए भी अंधों के समान थे। उन्हें रास्ता तो दीखता न था, किंतु आगे जानेवाले उदयन के घोड़े की टापों की आवाज़ को सुनते वे दोनों उसके पीछे जा रहे थे।

धीरे-धीरे सूरज पश्चिमी दिशा में डूबने को हुआ, याने शाम होने को थी। इस पर उदयन बोल उठा–"अब मैं आगे चल नहीं सकता। संध्याकुमार, तुम रास्ता दिखाओ; हम दोनों तुम्हारे पीछे चलेंगे।" अब संध्याकुमार आगे जाने लगा और उसके पीछे निशीथ और उदयन चल रहे थे।

काफ़ी देर बाद जब अंधेरा फैला, तब तक वे एक जंगल में पहुँचे। अंधकार

के निकट पहुँचा। उसने धीरे से दर्वाजे पर दस्तक दिया, मगर अंदर से कोई जवाब न आया। खिड़की के पास जाकर झांककर देखा, भीतर कहीं कोई आहट न थी। हिम्मत करके उसने दर्वाजा खोल दिया और घर के अंदर प्रवेश किया। घर के सभी कोनों में रेशे के ढेर पड़े थे, बस, उस घर में और कोई कहने योग्य चीज़ न थी। उसके आश्चर्य की कोई सीमा न थी। उसे डर भी लगा, फिर भी मकान के मालिक से मिलने के ख्याल से वह थोड़ी देर तक इन्तज़ार करता रहा।

फैलने के कारण उदयन तथा संध्या को अब विश्राम करना ज़रूरी था, लेकिन अर्द्ध रात्रि के वक़्त उस जंगल में कहाँ विश्राम करे? यही सवाल उनके सामने उपस्थित हुआ। वे चिंता में पड़ गये। उस समय निशीथ ने उनको एक पेड़ पर बिठाया और कहा–"तुम दोनों यहीं पर रहो। मैं तुम लोगों के आराम करने योग्य स्थान को ढूंढकर अभी लौट आता हूँ।" यों कहकर वह अपने दोनों भाइयों तथा उनके घोड़ों को वहीं छोड़ अपने काले घोड़े पर निकल पड़ा।

निशीथ बड़ी दूर तक चला गया। आखिर जंगल के बीच एक उजड़े मकान

देर तक इंतज़ार करने पर भी कोई आदमी बैठक में न आया, तब निशीथ ने सोचा कि वह कोई उजड़ा मकान ही होगा। यह निश्चय किया कि उसे तथा उसके भाईयों के आराम करने के लिए यह स्थान पूर्ण रूप से अनुकूल होगा। फिर वह अपने काले घोड़े पर सवार हो उदयन तथा संध्याकुमार के बैठे हुए उस पेड़ की ओर चल पड़ा।

निशीथ जब अपने भाइयों को पेड़ पर बिठाकर चल पड़ा, उसके थोड़ी देर बाद पेड़ के नीचे कोई आहट हुई; पेड़ पर बैठे दोनों भाइयों ने सोचा कि जंगल में कोई जानवर या कीड़े यह आवाज़ करते होंगे,

तब बड़ी उत्सुकता के साथ अपने भाई की प्रतीक्षा करने लगे।

अचानक उदयन ने अपनी कमर में गुदगुदी का अनुभव किया। उसने चौंककर अपनी कमर को टटोल कर देखा और कहा–"संध्याकुमार! कोई रेशे जैसी चीज़ मेरी कमर से लग रही है।"

उदयन की बातें पूरी न हो पाई थीं संध्याकुमार बोल उठा–"हाँ-हाँ! मेरी भी कमर को कोई चीज़ छू रही है। तुम्हारे कहे मुताबिक़ वह चीज़ रेशे जैसी लगती है। बताओ, आखिर वह चीज़ क्या हो सकती है?"

दोनों यों सोच ही रहे थे, तभी उन्हें लगा कि उनकी कमर के चारों तरफ़ कोई रस्सा लपेट कर खींचा जा रहा है।

इतने में उन्हें ये शब्द सुनाई पड़े–"मैं बड़े से बड़े लोगों को दिखाई नहीं देता! तुम्हें कैसे दिखाई दूँगा? चाहकर भी तुम लोग मुझे देख नहीं सकते?"

ये शब्द सुनने पर उदयन तथा संध्याकुमार ने भांप लिया कि किसी भूत या शैतान ने उन्हें रस्से से कस लिया होगा। मगर उनकी समझ में न आया कि क्या किया जाय! आखिर दोनों ने ऊँची आवाज़ में धमकी दी–"वक़्त पर हमारा भाई निशीथ यहाँ नहीं रहा, वरना वह

तुम्हारी खबर लेता! अब भी कोई घबड़ाने की बात नहीं; हमारा भाई आता ही होगा। उसके आने के पहले तुम चुपचाप यहाँ से भागकर चले जाओ, वरना तुमको आज ही वह काल का शिकार बना देगा।"

मगर वह व्यक्ति साधारण नहीं था, वह तैश में आया और ऐंठ कर बोला– "अबे, तुम्हारी गीदड़–भभकियाँ मेरे सामने चलने की नहीं? तुम्हारे भाई जैसे लोग एक नहीं, सौ भी आ जावे, तो मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। फिर भी मैं कोई बेवकूफ़ नहीं हूँ। तुम्हारे भाई के आने तक मैं यहाँ पर थोड़े ही रहूँगा।" यों कहते वह आगंतुक अपनी दाढ़ी के छोर पर उन्हें बांधकर जल्दी-जल्दी आगे बढ़ा। जाते वक़्त उसे कोई शैतानी सूझी; उसने एक नटखट का काम भी कर डाला। पेड़ से बंधे घोड़ों पर उसने कोई भस्म छिड़का दिया जिससे दोनों घोड़े गायब हो गये।

इसके थोड़ी देर बाद निशीथ पेड़ के पास लौट आया। पेड़ पर उसके भाई न थे और पेड़ के नीचे घोड़े भी गायब थे। उसे कुछ नहीं सूझा। वह यह सोचकर फिर लौट पड़ा कि उसके आने में देरी के होते देख उसके भाई उसकी खोज़ में कहीं चल न पड़े हो!

निशीथ ने अपने भाइयों को ढूंढते सारा जंगल छान डाला, पर कहीं उसे अपने भाइयों का पता न लगा। तब तक रात काफी बीत चूकी थी। दो घंटों में सवेरा भी होनेवाला था। उसका दिल धड़कने लगा। सवेरा हो गया तो वह एक भी क़दम आगे बढ़ा नहीं सकता। इसलिए अंतिम प्रयत्न के रूप में उसने एक बार और सारे जंगल को छान डाला, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा।

आखिर निशीथ के मन में एक विचार आया–'कहीं वे दोनों उस मकान में न गये हो जिसे वह देख आया है।' इस

विचार के आते ही वह झट घूम पड़ा और उस उजड़े मकान के निकट पहुँचा। उसने सोचा कि उसके भाइयों ने अपने घोड़े मकान के बाहर बांध दिये होंगे। मगर मकान के बाहर घोड़ों को न देख वह निराश हो गया। फिर भी मकान के अंदर जाकर देखना चाहा, निराशा भरे मन को लेकर वह दर्वाजा ढकेल कर भीतर पहुँचा। आश्चर्य की बात थी कि एक मोटे रेशे के रस्से से बंधे उदयन और संध्याकुमार कमरे के एक कोने में सो रहे हैं। उनके निकट ही फ़र्श पर खून के धब्बे दिखाई दिये। इससे भी अधिक भयंकर दृश्य यह था कि उदयन का एक हाथ कटकर गायब था, लेकिन हाथ के काटने के कोई निशान नज़र नही आ रहा था।

इस दृश्य को देखने पर निशीथ को लगा कि वह पागल होता जा रहा है। थोड़ी देर बाद आस्वस्थ हो उसने अपने भाइयों को जगाया। निशीथ को देखते ही बाक़ी दोनों भाइयों की जान में जान आ गई। वे निशीथ से गले लगकर आँसू बहाते हुए बोले–"भैया, तुम उस दुष्ट से बचकर कैसे आ गये? हमने आशा छोड़ दी थी कि फिर से हम मिलेंगे। अब हम को छोड़ कर तुम कहीं मत जाओ। चाहे जो हो, हम तीनों सदा साथ रहेंगे।"

"तुम लोगों को डरने की कोई ज़रूरत नहीं। चिंता न करो! लेकिन यह बताओ

थे कि कब सवेरा होगा। अभी अभी सवेरा होने को है, इसीलिए में थोड़ा-बहुत देख पाया। हम को यहाँ पर लानेवाला बड़ा ही विचित्र आदमी है। उसको देखने पर हमें हंसी आई! क्रोध भी आया। वह बित्ते पर लंबा आदमी है, मगर उसकी दाढ़ी सौ बित्ते लंबी है। उसने अपनी उसी दाढ़ी को हमारी कमरों से लपेट कर उसको रस्सी जैसा कस दिया। अब तक वह हमारी बगल में ही लेटा था, लगता है, अभी-अभी उठकर कहीं चला गया है, उसने जाग कर देखा तो तुम्हारे पैरों के निशान दिखाई दिये। वह आग उगलते यह कहकर उठने को हुआ, 'ओह, शायद तुम्हारे बड़े भाई आया मालूम होता है। अभी में उसको भी पकड़ लाता हूँ।' उस जल्दबाजी में वह यह बात भूल ही गया कि उसने हम को अपनी दाढ़ी से बांध रखा है, मुझे क्रोध आया, मैंने उसकी दाढ़ी पकड़ कर खींच दी, मुट्ठी भर रेशे जड़ के साथ निकल आये। उसमें से ख़ून गिरने लगा। तब उसकी आँखें लाल हो गईं, वह गरज कर बोला—"अबे, तुम्हारी ऐसी हिम्मत? अच्छा हुआ, तुमने सारी दाढ़ी तोड़ न डाली! वरना मैं खतरे में फँस जाता। तुम्हें इस करनी का फल भोगना पड़ेगा! समझें!'

कि तुम दोनों यहाँ पर कैसे आये? ये बंधन कैसे? तुम्हारा एक हाथ कहाँ? ख़ून की ये बूंदें कैसी? किस दुष्ट स तुम्हारे साथ यह अत्याचार किया है? वह कहाँ पर है? जल्दी बताओ।" निशीथ ने एक साथ कई सवाल किये!

उदयन ने यों कहा—"भाई, यह सब हमारी बदक़िस्मती है। जब तुम हम को छोड़कर चले गये, उसके थोड़ी देर बाद किसी ने हम को रस्सी से बांध दिया और हमको यहाँ लाकर इस घर में डाल दिया। वह दुष्ट कौन था? हम को कहाँ ले जा रहा था, यह बात अंधेरे की वजह से हम समझ न पाये। हम यही सोचकर परेशान

"इसके बाद वह गुस्से में काँप उठा, फिर बोला–'मेरी दाढ़ी में ही मेरे पांचों प्राण सुरक्षित हैं। इसमें से एक भी बाल गिर गया तो समझ लो कि मेरे एक प्राण उड़ गया है। अब इस कमबख्त ने चार लंबे केशों को खींच डाला है। ये केश इस जन्म में फिर से उगनेवाले नहीं हैं। मैं क्या करूँ?" यों गुनगुनते मुझ से बोला–"अबे तुम्हारे अपराध का यही दण्ड है, भोगो; ज़िंदगी भर तुम्हें याद रह जाएगी।" यों कहते जेब में से कोई अंजन निकाला और मेरी भुजा पर मल दिया। बस, इसके दूसरे क्षण में ही मेरा हाथ गायब हो गया। इसके बाद उसने अपनी दाढ़ी को कैंची से काट डाला और आसानी से उठ सका। मगर आश्चर्य की बात यह थी कि उसकी लंबी दाढ़ी फिर पहले जैसे हो गई। तब वह खुशी-खुशी यहाँ से चल दिया।" यह वृत्तांत सुनकर निशीथ भी आश्चर्य में आ गया।

इतने में सवेरा हो गया। तब उदयन ने कहा–"अच्छी बात है, अब देरी ही क्यों? वह तुम्हारी खोज में भटक कर यहीं लौट आता होगा। अलावा इसके अब सवेरा हो गया है, तुम्हारे द्वारा कोई प्रयोजन भी सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए मेरी जगह तुमको संध्याकुमार के साथ बांध देता हूँ। तुम इस तरह सावधानी से बैठे रहो जिस से तुम्हारा एक ही हाथ बाहर दिखाई पड़े और उस क़मबख्त दाढ़ीवाले के मन में संदेह पैदा न हो जाय। बाद की बात हम फिर सोच लेंगे।"

सब ने इस योजना को पसंद किया। निशीथ ने उनके बंधन खोल दिये। उदयन ने उठकर निशीथ को संध्याकुमार के साथ बांध दिया। बाहर खड़े निशीथ के काले घोड़े को वहाँ से थोड़ी दूर पर स्थित एक गुफा में ले जाकर उदयन ने बांध दिया। वह उस उजड़े मकान के पास ही एक झाड़ी के पीछे छुप गया और दाढ़ीवाले का इंतज़ार करने लगा।

ठीक दुपहर के वक़्त लंबी दाढ़ीवाला यह कहते झाड़ी की बगल से गुजरा–"वह जाएगा कहाँ? आज नहीं तो कल मेरे हाथ लगेगा। अ ह ह ह!"

दाढ़ीवाले के मकान में जाने पर उदयन दबे पाँव एक खिड़की के पास पहुँचा और झांककर देखा। उस वक़्त उसने एक विचित्र दृश्य देखा। दाढ़ीवाले ने जेब में से कोई दवा निकाली और उसे निशीथ तथा संध्याकुमार पर छिड़क दिया; फिर क्या था, दूसरे ही क्षण वे दोनों गायब हो गये। इसके उपरांत इतमीनान से दाढ़ीवाले ने अपने कंठ में से एक माला निकाली और उसको दीवार पर खूंटी से लटका दिया। आश्चर्य की बात यह थी कि माला के निकालते ही वह एक साधारण आदमी बन गया। उसके अब दाढ़ी तक न थी।

उदयन खिड़की में से यह सारा दृश्य देखता ही रहा। थोड़ी देर बाद वह दाढ़ीवाला निश्चित हो ज़मीन पर लेटकर खुर्राटे लेने लगा। मौक़ा पाकर उदयन मकान के अंदर गया। माला निकाल कर अपने गले में डाल ली, फिर क्या था, वह भी बित्तेभरवाला आदमी बन गया। उसके भी लंबी दाढ़ी थी। इस विचित्र परिवर्तन को देख उदयन को भी अपने ऊपर हंसी आ गयी। उसने मन में सोचा–'ओह! असली तंत्र यह है। अब दाढ़ीवाले को सबक़ सिखाया जा सकता है। मैं उस से बदला ले सकूंगा।'

उदयन ने जेबों को टटोल कर देखा; एक जेब में कोई सफ़ेद भस्म था। पेड़ के नीचे बंधे घोड़ों को दाढ़ीवाले ने इसी भस्म से गायब कर डाला था। दूसरी जेब में एक लाल अंजन की डिबिया थी। उस अंजन से दाढ़ीवाले ने उदयन का हाथ गायब कर डाला था। तीसरी जेब से एक हरे रंग के अंजन की डिबिया थी, साथ ही एक बड़ा तौलिया तथा काला भस्म भी था। मगर उदयन की समझ में न आया कि उनका प्रयोग किस काम के लिए किया जाता है। (और है)

खज़ाने का चोर

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, तुम न मालूम किस को वचन देकर इस प्रकार श्रम उठा रहे हो, मगर कभी कभी अपने वचन का पालन करने के लिए अन्याय का आश्रय लेना पड़ता है। इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुम को राजा विक्रमसेन की कहानी सुनाता हूं। श्रम को भुलाने के लिए वह कहानी सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में भावना नामक राज्य पर राजा विक्रमसेन शासन करता था। वह शासन के कार्यों में अत्यंत प्रवीण था। युद्ध में वह कभी पराजित न हुआ था। आस-पास के सभी राजा उसके सामंत बनकर कर चुकाया

बेताल कथाएँ

करते थे। विक्रमसेन का खजाना धन व रत्नों से भरा पड़ा था।

लेकिन थोड़े दिन बाद खज़ाने की संपति धीरे-धीरे घटने लगी। राजा के मन में संदेह हुआ कि कोई युक्ति के साथ खज़ाने को लूट रहा है। चोरों को पकड़ने के वास्ते राजा ने उचित प्रबंध किया। राजा स्वयं रात के वक़्त पहरा देने लगा, फिर भी खज़ाने की संपत्ति घटती जा रही थी।

आखिर राजा ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि खज़ाने को लूटनेवाले चोर को जो पकड़वा देगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जाएगा। राजकुमारी के साथ विवाह करने के ख्याल से कई युवकों ने चोर को पकड़ने का प्रयत्न किया, मगर चोर हाथ न लगा। खज़ाने में चोरियाँ भी बंद न हुई।

एक दिन दरबार लगा हुआ था। एक सुंदर युवक ने दरबार मं प्रवेश करके राजा से निवेदन किया–"महाराज, मैंने आप का ढिंढोरा सुना है। मैं समझता हूँ कि चोर को पकड़ने में मैं आप की सहायता कर सकता हूँ।"

"तुम जितने सैनिकों को चाहोगे, उतने सैनिकों को मैं तुम्हारे साथ भेज देता हूँ। तुम चोर को पकड़वा कर राजकुमारी के साथ विवाह करो।" राजा ने उत्तर दिया।

"महाराज, मुझे किसी और की सहायता नहीं चाहिए। आप स्वयं मेरे साथ चले तो पर्याप्त है। यदि आप को कोई आपत्ति न हो तो मुझ पर विश्वास कर मेरे साथ चले आइए।" युवक ने कहा।

राजा महान साहसी था, फिर भी थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब युवक से पूछा–"अच्छी बात है! बताओ, हम कब निकले?"

"मैं फिर आप की सेवा में पहुँच कर इसकी सूचना दूंगा।" यों उत्तर देकर वह युवक चला गया।

दो दिन बाद वह युवक एक रात को राजा से मिल कर बोला–"महाराज! आज रात को ही हमें वेष बदल कर रवाना होना होगा।"

थोड़ी देर बाद वे दोनों जंगल में प्रवेश करके टीलों के बीच आ गये। वह युवक राजा के साथ एक पहाड़ी शिला की ओट में छिप गया। उसने राजा से कहा–"महाराज! आगे की पहाड़ियों में एक बड़ी गुफा है। रात के वक़्त चोर वहाँ पहुँच कर शराब पीते हैं, हो-हल्ला मचाते हैं। मगर मैं आप को एक और दृश्य दिखाना चाहता हूँ।" ये शब्द कहकर वह युवक सावधानी से कोई आवाज़ सुनने लगा।

दूर पर पायलों की ध्वनि सुनाई दी। युवक ने राजा से कहा–"महाराज, दूर पर आनेवाली एक युवती है। आप सावधानी से देखिए।"

थोड़ी ही देर में उस रास्ते से सोलह साल की एक सुंदर युवती पायलों की आवाज़ करते आ पहुँची। उस के दोनों तरफ़ दो आदमी मशाल पकड़े हुए चल रहे थे। उस युवती के पीछे दो और व्यक्ति धन की गठरियाँ कंधों पर डाले चले आ रहे थे। राजा तथा युवक के देखते वे सब आगे बढ़ कर चले गये।

राजा को मौन देख युवक ने पूछा–"महाराज! आप क्या सोच रहे हैं?"

शराब पी रहे थे। एक ऊँची शिला पर चोरों का सरदार बैठा हुआ था। अब हम ने जिस युवती को देखा, वह एक युवक की बगल में बैठी थी। उसके निकट धन की गठरियाँ रखी हुई थीं। मुझे संदेह हुआ कि इतना सारा धन कहाँ से लाया गया है। आपके द्वारा पिटवाया गया ढिंढोरा सुनने पर मेरे मन में संदेह हुआ कि वह धन जरूर आप के खजाने का है। इसीलिए आज आप को यहाँ बुला ले आया हूँ।"

राजा ने युवक से कहा–"हम ने जिस लड़की को देखा, उसको तुम कौन समझते हो? वह मेरी पुत्री है।"

युवक ने घबरा कर कहा–"महाराज, यह बात सच है? यह बात मुझे जरा भी मालूम हो जाती तो मैं आप को यहाँ पर ले नहीं आता। कैसा अन्याय हो गया है? आप मुझे क्षमा कर दीजिएगा।"

"पगले, तुम चिंता क्यों करते हो? चाहे वह मेरी पुत्री हो या दूसरी कोई हो! न्याय तो होना ही चाहिए। कल मैं उसको दरबार में सभी लोगों के समक्ष कठिन दण्ड दूँगा। तुम कल राजमहल में आ जाओ।" यों समझा कर राजा अपने महल को लौट गया।

"तुम को यह कैसे मालूम हुआ कि यहाँ पर यह दृश्य हमें दिखाई देगा?" राजा ने युवक से पूछा।

युवक ने यों उत्तर दिया–"महाराज, मैं बचपन से ही माता-पिता के वचनों की परवाह किये बिना निर्भय पहाड़ों तथा जंगलों में स्वेच्छापूर्वक घूमता आ रहा हूँ। एक दिन की रात को मैं उस गुफा के पास पहुँचा, जिस गुफा के बारे में मैंने अभी आपको संकेत किया। मुझे गुफा के भीतर से कोलाहल सुनाई दिया। गुफा के अन्दर चोर बैठे हुए थे। एक ओर महाकाली की मूर्ति थी, कुछ लोग उसकी पूजा कर रहे थे। कुछ लोग

राजा सीधे राजकुमारी के कक्ष में पहुँचा और वहाँ की परिचारिकाओं से पूछा–"राजकुमारी कहाँ? बताओ?" सब परिचारिकाएँ घबरा उठीं।

प्रात: काल तक राजा अपनी पुत्री के कमरे में ही रहा। प्रात: काल के पहले राजकुमारी के लौटते ही राजा ने पूछा–"तुम रात भर कहाँ रही?" राजकुमारी ने अपना सिर झुका लिया। मगर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

दूसरे दिन राजा ने दरबार में कहा–"हमने राजकुमारी को राजद्रोही निर्णय किया है, उसको कठिन दण्ड दिया जाएगा।"

उस समय राजदरबार में उपस्थित युवक ने उठकर नम्र शब्दों में कहा–"महाराज! यदि आप राजकुमारी को चोर ठहरा देते हैं तो उनको पकड़वाने के उपलक्ष्य में उनके साथ आप को मेरा विवाह करना होगा।"

राजा ने युवक के अनुरोध को स्वीकार किया और उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, विक्रमसेन ने अपनी पुत्री को दण्ड क्यों नहीं दिया? क्या युवक को जो वचन दिया था, उसका पालन करने के लिए? या अपनी पुत्री को दण्ड न देने के लिए इस वचन को आधार बना कर युवक को दूसरे दिन दरबार में आने का निमंत्रण दिया था! इस संदेह का समाधान

जानकर भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया— "यह समस्या वैसी सरल नहीं है। उस युवक का व्यवहार प्रारंभ से अंत तक संदेहास्पद ही रहा है। उसने जब राजा को अपना परिचय दिया तब उसने वे सभी लक्षण बताये जो एक कुशल चोर में होते हैं। राजा को केवल चोर पकड़वाना ही यदि उसका उद्देश्य होता तो राजा के यहां से सैनिकों को ले जाकर राजकुमारी तथा गुफा में रहनेवाले चोरों को वही स्वयं पकड़ सकता था। उसने राजा को जो दृश्य दिखलाया, वह एक कृत्रिम नाटक जैसा लगता है। उस में मशाल केवल राजकुमारी को पहचानने के लिए ही हैं। वरना उसका उपयोग ही क्या! राजा को यह दृश्य दिखाने के पहले युवक ने दो दिन की मोहलत क्यों मांगी है? शायद उस प्रदर्शन के प्रबंध के लिए ही होगा। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि राजा के मन में उस युवक के प्रति शंका है। राजा को मालूम हुआ कि उसकी पुत्री ने एक डाकू के साथ प्यार किया है, फिर भी वह युवक राजकुमारी की मांग करने का साहस करेगा कि नहीं, यह जानने के लिए ही राजा ने उस युवक को दरबार में उपस्थित होने का निमंत्रण दिया। युवक न केवल दरबार में उपस्थित हुआ बल्कि राजकुमारी के साथ विवाह करने में भी झिसक नहीं दिखाई। यह बात राजा को स्पष्ट हो गई कि वही युवक डाकू है और राजकुमारी उस युवक के साथ प्यार करती है। युवक ने राजकुमारी के साथ गुप्त रूप से प्यार करने के बदले राजकुमारी को ही चोर के रूप में पकड़वाकर राजा के वचन के अनुसार विवाह करने की एक अच्छी योजना बनाई। उसकी बुद्धिमत्ता के सामने नतमस्तक हो राजा ने उन दोनों का विवाह किया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

अनोखी चाल!

एक गाँव में एक ज़मीन्दार था। वह बड़ा ही उत्तम स्वभाव का था। उसके एक ही पुत्र था। ज़मीन्दार ने अपने पुत्र को बड़े ही लाड़-प्यार से पाल-पोसकर बड़ा किया। मगर वह बुरी संगति में पड़कर पैसे को पानी की तरह खर्च करने लगा।

एक बार ज़मीन्दार का पुत्र पड़ोसी गाँव में गया और अपने हाथ का सारा धन खर्च कर डाला। इसलिए वह उस गाँव के एक महाजन के यहाँ गया। उससे कहा कि उसे पाँच सौ रुपये उधार में दे तो वह घर पहुँचते ही ब्याज सहित सारे रुपये भिजवा देगा।

महाजन ज़मीन्दार को भली भाँति जानता था। इसलिए उसने ज़मीन्दार के पुत्र को उधार देने का निश्चय करके कहा–"बेटा, कोई चीज़ गिरवी रखे बिना उधार देने का मेरा नियम नहीं है। तुम अपनी कोई चीज़ मेरे यहाँ गिरवी रखकर उधार की रक़म लेते जाओ।"

ज़मीन्दार के पुत्र ने थोड़ा विचार करके कहा–"महाशय, मेरे पास फ़िलहाल एक तलवार है। इसे अपने पास गिरवी रखकर रुपये दीजिए।"

महाजन ने तलवार लेकर ज़मीन्दार के पुत्र को पाँच सौ रुपये दे दिये।

एक वर्ष बीत गया। इस बीच ज़मीन्दार का देहांत हो गया। ज़मीन्दार का पुत्र उस संपत्ति का वारिस बना। उसने पड़ोसी गाँव के महाजन का ऋण नहीं चुकाया।

महाजन ने निश्चय कर लिया कि ज़मीन्दार का पुत्र उधार की रक़म नहीं चुकायेगा, इसलिए किसी युक्ति के साथ ही अपने ऋण को वसूल करना है।

अशोक विकल

महाजन के गाँव का धोबी ही ज़मीन्दार के परिवार के कपड़े भी धोया करता था।' महाजन का धोबी भी वही था।

एक दिन महाजन ने धोबी को धुलाई के कपड़े देते हुए कहा–"ज़मीन्दार का लड़का अपनी तलवार गिरवी रखकर मुझ से उधार ले गया है। अब वह तलवार दिखाई नहीं दे रही है। मेरी समझ में नहीं आता कि अगर ज़मीन्दार का लड़का रुपये लाकर अपनी तलवार माँग बैठे तो क्या करूँ?"

धोबी ने दूसरे ही दिन ज़मीन्दार के घर जाकर यह खबर ज़मीन्दार के पुत्र को दी। यह समाचार सुनकर ज़मीन्दार का लड़का बड़ा खुश हुआ। वह उधार के पाँच सौ रुपये तथा ब्याज के दो सौ लेकर महाजन के घर पहुँचा। महाजन ने ज़मीन्दार के पुत्र को बैठने के लिए एक आसन देकर उसका आदर किया।

"बैठने के लिए मेरे पास समय नहीं है। मुझे जल्दी जाना है। मैं आप का ऋण चुकाकर अपनी तलवार ले जाने आया हूँ।" ज़मीन्दार के पुत्र ने कहा।

"तलवार कैसी?" महाजन ने याद करने का अभिनय करते पूछा।

"जी हाँ! तलवार! वह मेरे बाप-दादों के ज़माने की है। हमारे परिवार की इज्ज़त का चिह्न है। यदि वह खो गई तो मैं आप से दस हजार रुपये वसूल करूँगा।" ज़मीन्दार के पुत्र ने कहा।

महाजन ने इतमीनान से कहा–"अच्छी बात है; ढूंढ लेता हूँ। चार-पाँच दिन पहले मैंने ढूँढा तो नहीं मिली। अगर मैंने उसे खो दी है तो उसका मूल्य मुझे चुकाना ही पड़ेगा। क्या तुम रुपये ले आये हो?"

ज़मीन्दार के पुत्र ने सात सौ रुपये गिनकर महाजन के हाथ दे दिये। महाजन भीतर चला गया, तलवार लाकर उसके हाथ दे दी। ज़मीन्दार के पुत्र का चेहरा पीला पड़ गया। वह अपना सा मुँह लेकर वापस चला गया।

१५६. प्राकृतिक शिल्प

कहा जाता है कि अर्मेनिया देश अद्भुत वस्तुओं के लिए मशहूर है। इस पहाड़ पर दिखाई देनेवाला शिल्प मानव निर्मित नहीं है, प्राकृतिक है। इसमें अनेक गुफाओं जैसे शिल्प भी हैं। जहाँ-तहाँ स्वच्छ एवं मीठे जल के स्रोते निकलते हैं। इस पानी को सरं.वरों में सुरक्षित करके अर्मेनिया के नगरों में पहुँचाया जाता है।
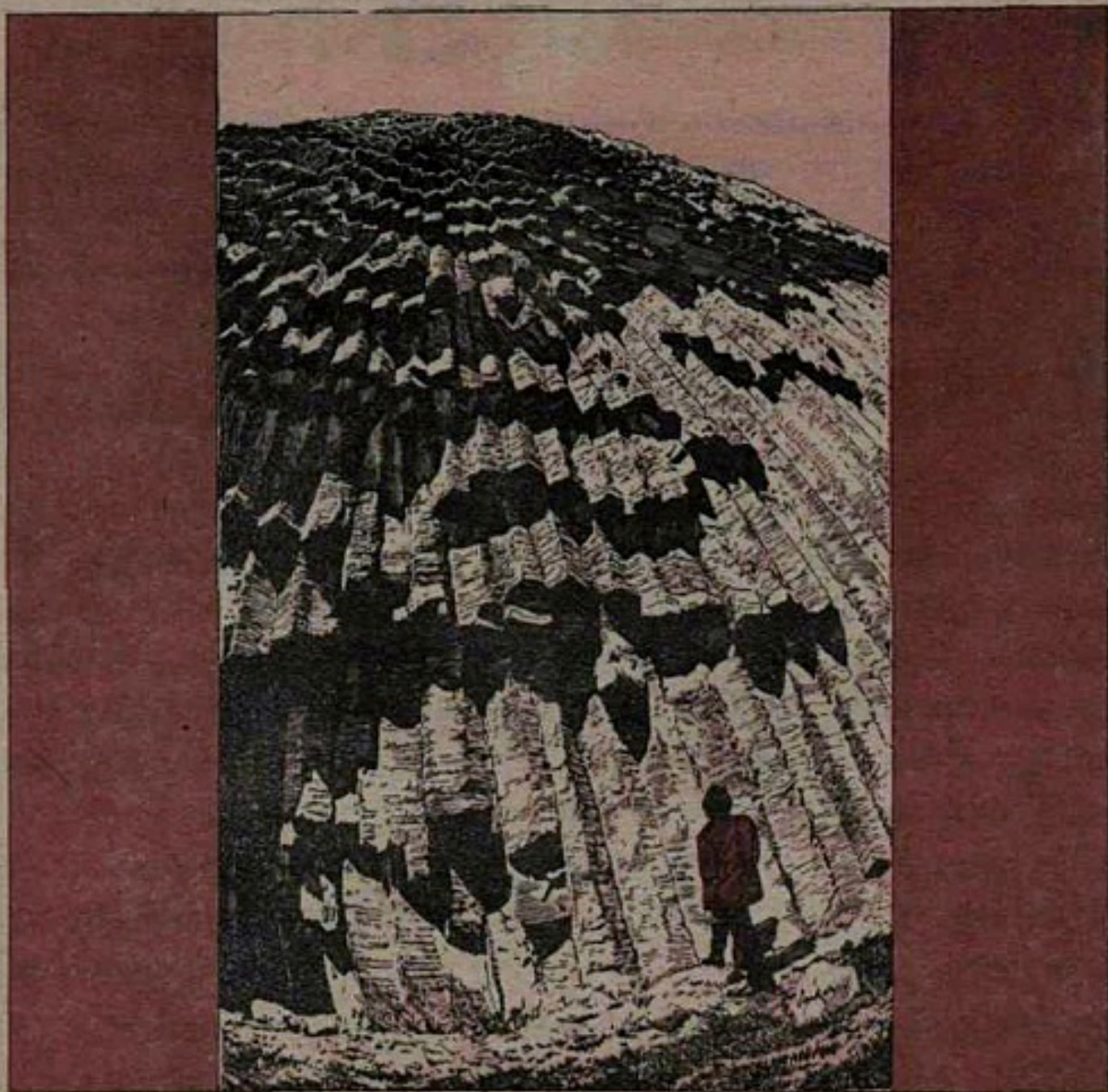
राजगुरु

कोसल देश का राजा प्रचण्ड अपने उत्तम शासन के द्वारा अत्यंत लोकप्रिय था। लेकिन दिल की धड़कन की बीमारी से अचानक उसका स्वर्गवास हो गया। इस पर शिक्षाभ्यास करनेवाला प्रचण्ड का पुत्र सुकुमार छोटी उम्र में ही कोसल का राजा बन बैठा।

कोसल देश का यह रिवाज़ था कि समस्त प्रकार की विद्याएँ प्राप्त करने के बाद ही राजकुमारों को राजनीति सिखलाई जाय। इसलिए सुकुमार राजगुरु के यहाँ राजनीति की शिक्षा प्राप्त करने के पहले ही राजा बन गया। सुमति ने सुकुमार को समस्त प्रकार की विद्याएँ सिखलाई थीं। सुमति बहुत बड़ा विद्वान ही नहीं बल्कि तत्ववेत्ता भी था। सुकुमार के राजा बनते ही सुमति ने उसे कुछ सलाहें दीं।

"मनुष्य के लिए मुख्य वस्तु मन है, इसलिए सदा उसे स्वच्छ रखना चाहिए। बुरे कामों के बारे में सदा सोचते रहने की अपेक्षा एक बार वह काम करके अपने मन को साफ़ रखना उत्तम है।

"प्रत्येक मनुष्य में अहं होता है, इसलिए वह जपने को बड़ा व्यक्ति समझता हैं। लेकिन जो व्यक्ति सामनेवाले व्यक्ति के बड़प्पन को पहचान लेता है, वह सचमुच बड़ा होता है। ऐसे ही लोगों को राजा आश्रय दे।

"मनुष्य दो प्रकार के होते हैं—अच्छे और बुरे। परंतु राजा का कर्तव्य है कि देश के बुरे लोगों का अंत करके अच्छे लोगों को जीवित रहने दे।

"हम चाहे जो भी संकल्प करे, पर भगवान की सहायता के बिना कोई काम नहीं होता। भगवान की सहायता प्राप्त

प्रदीपकुमार गुप्ता

हो तो हमारा संकल्प किया हुआ काम अपने आप संपन्न हो जाता है।"

ये सलाहें सुनने पर सुकुमार ने सोचा कि उसे राजनीति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया है। एक साल के अन्दर वह पूर्ण रूप से विलासी बन गया। उसके शासन से जनता बिलकुल असंतुष्ट हो उठी। लोग अनेक प्रकार की यातानाओं के शिकार होने लगे।

दो वर्ष के पूरे होते होते राज्य की हालत अस्त-व्यस्त हो गई। देश में ये अफ़वाहें फैल गयीं कि कोसल देश आर्थिक तथा सैनिक दृष्टि से भी कमज़ोर हो गया है। यह भी पता लगा कि पड़ोसी देश का राजा कोसल पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कर रहा है और वह किसी क्षण कोसल पर हमला कर सकता है।

यह समाचार मालूम होने पर सुकुमार सुमति के पास गया और बोला–"गुरुवर! में आप की सलाहों के अनुसार ही सारे कार्य कर रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि शासन कार्य संतोषजनक नहीं है। मैं बहुत ही परेशान हूँ।"

"मेरी सलाहों का तुमने ठीक से पालन नहीं किया। तुम विलासी बन गये हो! इसी का परिणाम तुम देख रहे हो!" सुमति ने खीझकर कहा।
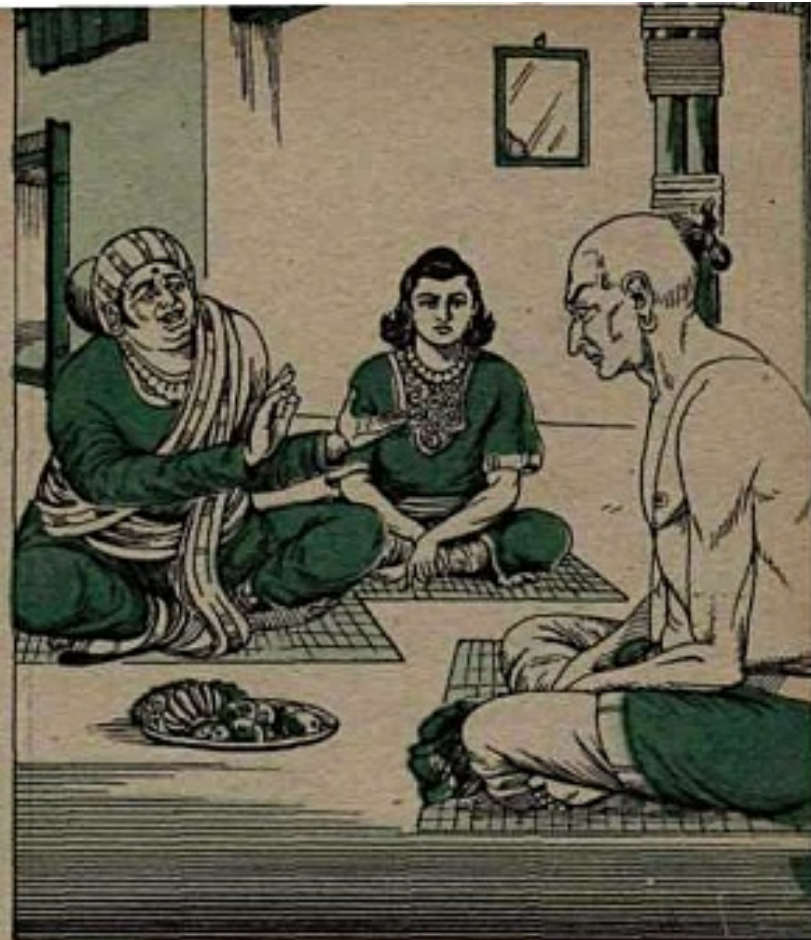
"आपने ही तो बताया था कि पापपूर्ण विचारों को मन में रखे बिना आचरण करके उनसे मन को विमुक्त बनाना चाहिए। मधुपान तथा स्त्रियों से मेरे मन को अभी तक विमुक्ति प्राप्त नहीं हुई। इसलिए मैं अपनी सारी इच्छाओं को पूर्ण करके मन को साफ़ रखना चाहता हूँ।" सुकुमार ने उत्तर दिया।

ये वचन सुन सुमति व्याकुल हो उठा। उसने कभी कल्पना तक नहीं की थी कि उसकी सलाह इस प्रकार विपरीत परिणाम पैदा कर देगी। उसकी समझ में न आया कि क्या किया जाय? तब उसने राजगुरु को बुला भेजा।

आकर तुमने किसी को मार डाला, तुम राजा हो, इसलिए तुमको रोकनेवाला कोई न होगा। उस मनुष्य का वध करके तुम अपने मन को साफ़ करोगे, लेकिन बाद को तुम चाहते हुए भी उस मनुष्य को पुनः जिला नहीं सकते। इसलिए तुम्हें अपने मन पर पुर्ण रूप से नियंत्रण रखना चाहिए।"

राजगुरु के वचनों में सुकुमार को सचाई दिखाई दी। सुमति ने जान लिया कि राजा बनने योग्य व्यक्ति के लिए सलाह देने की क्षमता उस में नहीं है। वह राजगुरु से क्षमा मांग कर चला गया।

बहुत समय बाद राजगुरु तथा सुकुमार मिले। सुमति के सामने उपस्थिति इस जटिल समस्या के बारे में सुनकर राजगुरु मुस्कुरा कर बोला–"सुनिये! आप ने सुकुमार को जो सलाहें दीं, वास्तव में वे बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं। परंतु वे सलाहें दार्शनिकों को छोड़ साधारण व्यक्तियों के लिए उपयोगी सिद्ध न होंगी। जनता पर शासन करनेवाले युवक के लिए तो बिलकुल काम न देंगी।" फिर राजगुरु ने सुकुमार की ओर मुड़कर कहा–"बेटा! एक राजा के लिए मन को साफ़ रखना मुख्य नहीं है, शांति से सोचना एवं विचारना प्रधान है। मान लो, क्रोध में

तब राजगुरु ने सुकुमार को समझाया– "तुम राजा हो! अधिकार तुम्हारे हाथ में है। कोई भी बुद्धिमान तुम्हारे समक्ष तुम्हारी निंदा नहीं करेगा। तुमसे पुरस्कार पाने के लिए तुम्हारी प्रशंसा ही करेगा। तुम यह समझ कर कि वे सब तुम्हारे बड़प्पन को जानते हैं, उन्हें आश्रय दोगे तो वह तुम्हारी मूर्खता ही होगी। वे सब राजभक्ति रखनेवाले नहीं होते। मैं तुमको एक सच्चे राजभक्त को दिखाता हूँ। आज रात को हम उसके घर वेष बदल कर जायेंगे।"

उस दिन रात को राजगुरु तथा सुकुमार वेष बदल कर एक गरीब ब्राह्मण के घर

गये। दोनों ने अपने को पड़ोसी गाँव के व्यक्ति बताये, इस पर उस ब्राह्मण ने उस रात को उन दोनों को अपने घर आश्रय के साथ आतिथ्य भी दिया।

वार्तालाप के संदर्भ में राज गुरु ने देश की हालत का ज़िक्र किया। ब्राह्मण ने आवेश में आकर अपने देश के राजा की निंदा की। ब्राह्मण सुकुमार की निंदा कर रहा था कि सुकुमार प्रचण्ड की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिला रहा है। वह असमर्थ है और जनता को नाना प्रकार से सता रहा है, फिर भी ये बातें सुनते सुकुमार अपने क्रोध पर नियंत्रण कर सका।

आधी रात के वक़्त राजगुरु तथा सुकुमार उस ब्राह्मण के घर से खिसक गये।

सुकुमार ने राजगुरु से कहा–"गुरुजी, मैं इस ब्राह्मण को जानता हूँ। यह रोज दरबार में आता है। सब लोग मेरी प्रशंसा करके पुरस्कार ले जाते हैं। मगर यह मौन रहता है। इसलिए मैंने आदेश दिया है कि इस को कोई पुरस्कार न दिया जाए। न मालूम क्यों, यह मुझसे असंतुष्ट है। जो मुँह में आया, बक दिया। यदि आप मेरे साथ न होते तो मैं इसका काम तमाम कर देता।"

"हम कल फिर अपने वेष बदल कर उसी के घर जायेंगे। देखेंगे, क्या होता है।" राजगुरु ने कहा।

दूसरे दिन उन दोनों के प्रवेश करते ही उस ब्राह्मण ने आदर-सत्कार किया और

पूछा–"आप दोनों आधी रात के वक़्त चले गये हैं। बात क्या है?"

राजगुरु ने उस ब्राह्मण को सुकुमार का परिचय कराते हुए कहा–"यह हमारे देश का शासक है। अपनी निंदा करनेवाले व्यक्ति के घर नींद न आने के कारण आधी रात को ही चल देने को कहा।" सुकुमार ने अपना वेष बदल लिया।
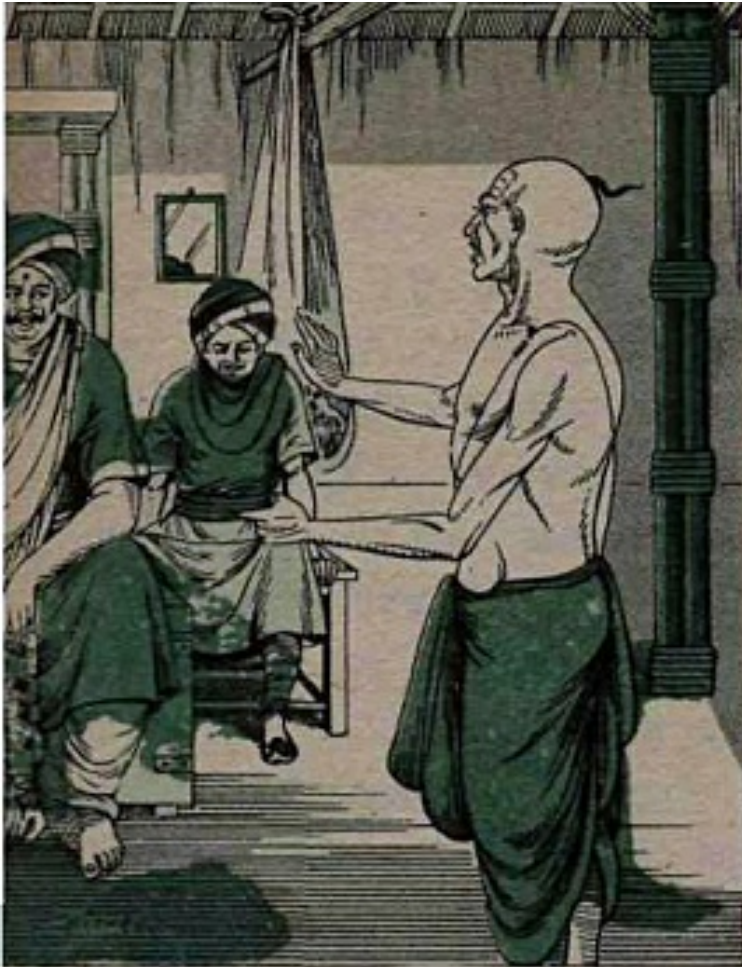
ब्राह्मण घबरा कर उठ खड़ा हुआ और राजा के लिए एक आसन लगाते हुए बोला–"मैं नहीं जानता था कि आप हमारे राजा हैं। इसलिए अज्ञानवश मैंने कल आपकी निंदा की। मैं एक गरीब ब्राह्मण हूँ। मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं ठीक से आपका आदर-सत्कार भी न कर पाया।"

इस पर राजगुरु ने हंस कर कहा–"पगले ब्राह्मण! तुम चाहे जो भी सत्कार करो, राजा का मन बदलेगा नहीं। तुम्हें किसी भी रूप में दण्ड भोगना ही पड़ेगा।"

ब्राह्मण ने जरा भी विचलित हुए बिना कहा–"मैं दण्ड के भय से आप लोगों का सत्कार नहीं कर रहा हूँ। अपने देश के राजा के प्रति व्यक्तिगत रूप से मैं संतुष्ट नहीं हो सकता हूँ। लेकिन मैं सदा उस आसन का आदर करता हूँ। चाहे वे असंख्य गलतियाँ करें। फिर भी जब तक वे उस पद पर रहेंगे, तब तक मैं उनका आदर करूँगा। अपने देश के राजा की बेइज्जती करने का तात्पर्य है, मैं अपनी बेइज्जती कर रहा हूँ! उनमें परिवर्तन हो जाय, इस विचार से मैं रोज उन्हें आशीर्वाद देने के लिए दरबार में जाता हूँ। मगर उनमें जो गुण नहीं हैं, उन गुणों का आरोप करके मैं उनकी प्रशंसा नहीं करूँगा। इसीलिए मुझे पुरस्कार नहीं मिलता। फिर भी पीढ़ी दर पीढ़ियों से चले आने वाले अपने परिवार के इस आचार को मैं त्याग नहीं सकता।"

ये बातें सुनने पर सुकुमार की आँखें खुल गईं।

ब्राह्मण के घर से बाहर आने पर राजगुरु ने कहा–"तुमने एक सच्चे राजभक्त को देखा है न! ऐसे व्यक्ति यदि तुम्हारी प्रशंसा करे, तभी तुम्हें प्रसन्न होना है। बाक़ी लोगों की प्रशंसाएं झूठी हैं।"

इसके बाद राजगुरु ने सुकुमार को समझाया! चाहे कोई भी व्यक्ति अच्छा हो या बुरा, प्रत्येक व्यक्ति से सीखने की कोई न कोई बात होती है। राजा को चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति से कुछ न कुछ सीखने का प्रयत्न करे।

यह बात सुकुमार को कुछ असंदर्भ सी लगी। उसने कहा–"हमारे कारागार में अनेक अपराधी हैं। उनसे मुझे सीखने की बात क्या होती है?"

दूसरे दिन राजगुरु सुकुमार को कारागार में ले गया। वहाँ के अपराधियों में एक घोड़ों को चुरानेवाला था। वह बड़ी चालाकी से किसी भी घोड़े पर नियंत्रण करके मिनटों में गायब हो जाता है। "क्या इस से घोड़ों की चोरी करने की बात सीखनी होगी?" सुकुमार ने व्यंग्य से पूछा।

"नहीं, मगर नये से नये घोड़ों पर क़ाबू रखने की कला इस से सीखनी है। मिनटों में गायब होनेवाली घुड़सवारी की कुशलता सीखनी है।" राजगुरु ने गंभीर होकर कहा।

इसी प्रकार अनेक बार राज्य के खज़ाने से धन लूटनेवाले डाकू से कड़ा पहरा बिठाये

गये भवनों में प्रवेश करने की विद्या सीखनी है। इसी भाँति प्रत्येक अपराधी से सीखने की कोई न कोई बात होती है।

अंत में कारागार के अधिकारी ने एक अपराधी को दिखाते हुए कहा—"इसके साथ घृणा न करनेवाला व्यक्ति कोई नहीं है। जो इसकी भलाई करते हैं, उनकी यह बुराई करता है। इसके मन में कृतज्ञता नामक चीज जरा भी नहीं है। जिस क्षण जो मन में आया, सो कर बैठता है। इसके द्वारा कई नारियाँ अपनी इज्जत खो बैठी हैं। कई लोग अपनी जान खो बैठे हैं।"

"ऐसे व्यक्ति से सीखने की बात क्या हो सकती है?" सुकुमार ने पूछा।

"मनुष्य को कैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए, यह बात इसके द्वारा सीखी जा सकती है।" राजगुरु ने बताया।

तुरंत हाथ जोड़कर सुकुमार ने कहा—"गुरुदेव! आप ने जो कुछ कहा, सब सत्य है।"

"अभी पूरा नहीं हुआ। इन अपराधियों पर पहरा क्यों बिठाया गया है?" राजगुरु ने पूछा।

"ये लोग भाग जायेंगे तो जनता के लिए खतरा पैदा हो सकता है, इसीलिए!" सुकुमार ने जवाब दिया।

"हमें जो भी कार्य करना है, उसके लिए भगवान की सहायता की जरूरत होती है। अच्छे कार्य के लिए भगवान की सहायता होती है। अपराधियों पर पहरा देने का भार भगवान पर छोड़कर तुमने मनुष्यों को क्यों सौंप दिया है?" राजगुरु ने पूछा।

सुकुमार ने कोई जवाब नहीं दिया।

"तब तो हमारे प्रयत्न के बिना भगवान की सहायता प्राप्त नहीं होगी। बस, यही है न?" राजगुरु ने पूछा।

इसके उपरांत सुकुमार ने राजगुरु से अनेक बातें सीखीं। राजनीति का ठीक से अवलंबन कर पिता से योग्य राजा कहलाया।
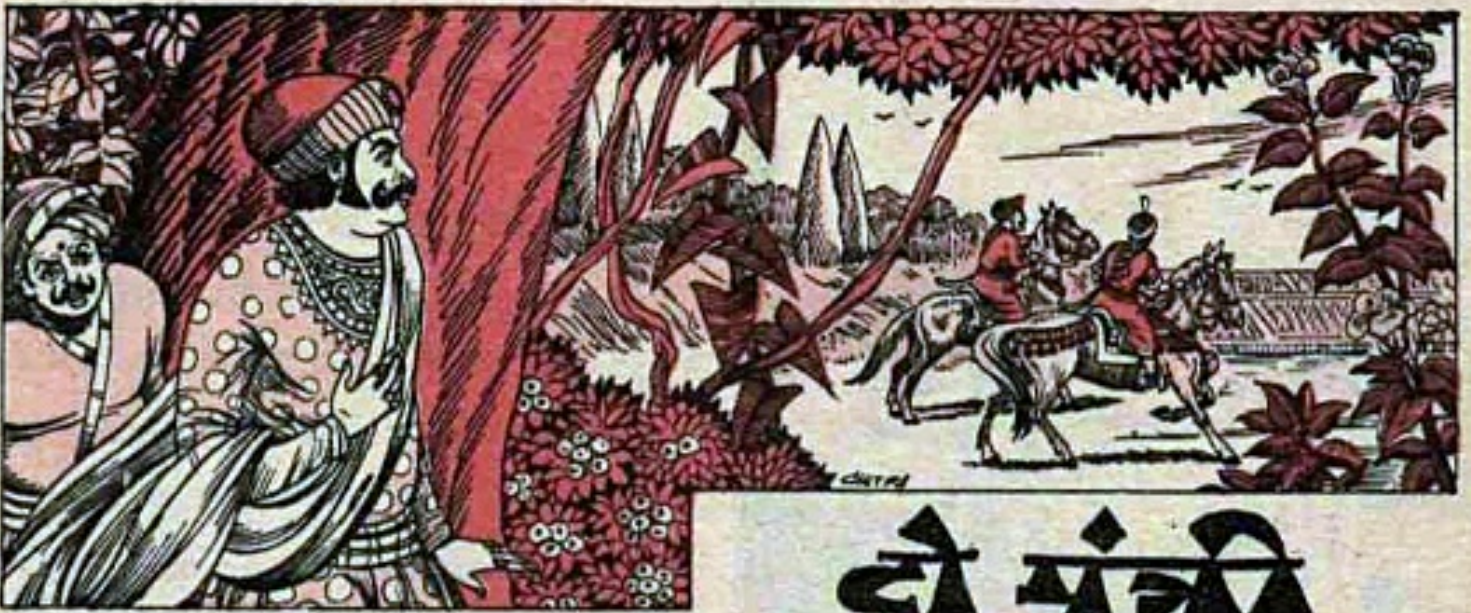
दो मंत्री

चन्दनपुर के राजा सुमंत के यहाँ अरविंद भट्ट नामक एक मंत्री था। चन्दनपुर के आसपास में हाथी ज़्यादा रहा करते थे। इसलिए उस देश में घोड़ों की अपेक्षा हाथियों की संख्या अधिक थी। इसी प्रकार शमंतिनी नामक राज्य में हाथियों की अपेक्षा घोड़े ज़्यादा थे। इसलिए राजा सुमंत ने अपने मंत्री को बुलाकर कहा–"आप शमंतिनी में जाकर यह पता लगाकर लौटिये कि वे लोग हमारे हाथी लेकर बदले में घोड़े देते हैं या नहीं?"

मंत्री अरविंद भट्ट एक सेवक को साथ ले शमंतिनी में गया। राजा से बातचीत करके हाथियों के बदले घोड़े देने के लिए मनवाया। शमंतिनी राज्य के मंत्री आदि भट्ट ने अरविंद भट्ट को एक दिन अपने घर अतिथि बनकर रहने का निवेदन किया।

भोजन समाप्त करने के बाद जब दोनों मंत्री वार्तालाप कर रहे थे, उस समय आदि भट्ट ने अरविंद भट्ट से कहा–"हमारे राजा मेरे हाथ का खिलौना है। मैं जो कहूँ, उसे मान लेता है। मेरी इच्छा के विरुद्ध एक भी बात बोलने की हिम्मत नहीं करता।"

पर अरविंद भट्ट आदि भट्ट की बातों पर यक़ीन नहीं कर पाया।

"यह बात आप स्वयं जान सकते हैं। आज शाम को मैं तथा राजा अमुक दिशा में सैर करने जाते हैं, आप कहीं गुप्त रूप से छिपे रहकर इसकी जाँच कर सकते हैं।" आदि भट्ट ने कहा।

अरविंद भट्ट उसी दिन शाम के वक़्त अपने सेवक को साथ लेकर शहर के बाहर गया और एक बड़े बृक्ष की आड़ में छिप गया।

किशन मोदी

"हाँ, हाँ! ऐसे बड़े अजगर को मैंने आज तक कभी नहीं देखा है ।" राजा ने मंत्री की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा । तब दोनों आगे बढ़ गये ।

ये बातें पेड़ की आड़ में से सुननेवाले अरविंद भट्ट तथा उसका सेवक आश्चर्य में आ गये । अरविंद भट्ट ने आदि भट्ट के घर पहुँचकर उसने अपने को आदि भट्ट से भी बड़ा मंत्री साबित करने का निश्चय कर लिया ।

आदि भट्ट ने घर लौटकर अरविंद भट्ट से कहा—"आप ने स्वयं देखा है न मेरा बड़प्पन?"

अरविंद भट्ट ने लापरवाही से कहा—"चाहे जो हो, तुम मुझ से बड़े नहीं हो! मैं तैश में आ गया तो हमारे राजा को गालियाँ तक सुनाता हूँ । गालियाँ सुनकर भी हमारे राजा चुप रह जाते हैं । मेरे साथ चलो, स्वयं देख लो ।"

इसके बाद वे दोनों चन्दनपुर पहुँचे ।

"मैं राजा से बातचीत करने जा रहा हूँ, तुम पर्दे की आड़ में रहकर सारी बातें सुन लो ।" अरविंद भट्ट ने कहा । इसके बाद उसने आदि भट्ट को एक पर्दे के पीछे बिठाया । पर्दे के उस पार जहाँ राजा बैठे थे, वहाँ पर अरविंद भट्ट पहुँचा ।

इसके थोड़ी देर बाद घोड़ों पर आगे मंत्री तथा पीछे राजा आ निकले । आदि भट्ट ने रास्ते में अपना घोड़ा रोक कर राजा को एक ज्वार का खेत दिखाते कहा—"गन्ने के इस खेत को देख लीजिए; इनके शहतीर कैसे मोटे हैं!"

राजा ने उस ओर देखकर कहा—"हाँ, हाँ, ईख के ये शहतीर मोटे मोटे लगते हैं ।"

इतने में मंत्री ने उस ओर निकलने वाले एक पतले हरे साँप को दिखाते हुए अपने राजा से कहा—"महाराज! देख रहे हैं न? वह अजगर कैसा लंबा और मोटा है ।"

"मंत्री महोदय, आप जिस कार्य से गये थे, वह क्या हुआ?" राजा ने अरविंद भट्ट से पूछा। इसका उत्तर अरविंद भट्ट ने यों दिया–"कार्य तो सफल हो गया है। लेकिन इस यात्रा के द्वारा मेरा शरीर थककर शिथिल हो गया है। तुम्हारी बेमतलब की सलाहें सुनकर कड़ी धूप में जाना मेरी बेवक़ूफ़ी थी। तुम्हारी उम्र तो बढ़ती जा रही है, मगर अक़्ल नहीं।"

ये बातें सुनकर भी राजा सिर हिलाते मुस्कुराने लगा। इस दृश्य को पर्दे की आड़ में से आदि भट्ट ने देखा। उसके आश्चर्य की कोई सीमा न थी।

अरविंद भट्ट ने आदि भट्ट के निकट आकर कहा–"अब मानते हो कि तुम से मैं ही बड़ा व्यक्ति हूँ।"

"इस में संदेह क्या है?" आदि भट्ट ने बिना झिझक के कहा।

इतने में अरविंद भट्ट का सेवक आया, अपने मालिक को अलग ले जाकर बोला–"सरकार! सुनते हैं कि शमंतिनी देश के राजा को आँखें दिखाई नहीं देतीं। उनके मंत्री का सेवक बता रहा है। इसीलिए शायद उस देश के राजा ने ज्वार के खेत को ईख का खेत बताया और पतले हरे साँप को अजगर बताया।"

इस बीच आदि भट्ट का सेवक आकर उसे दूसरी तरफ़ ले गया और बोला–"सरकार, सुनते हैं कि इस देश का राजा बहरा है। उनके मंत्री के सेवक ने मुझ से बताया है।"

दोनों मंत्री परस्पर धोखा खाने के कारण क्रोध में आ गये। अरविंद भट्ट ने शमंतिनी देश के राजा के नाम एक पत्र लिखकर उसमें आदि भट्ट की सारी करतूत प्रकट की। इसी प्रकार आदि भट्ट ने अरविंद भट्ट की पोल खोलते हुए सुमंत के नाम एक पत्र भेजा।

इन पत्रों के फलस्वरूप अरविंद भट्ट तथा आदि भट्ट के मंत्री-पद जाते रहें, साथ ही उन्हें देश निकाले के दण्ड भी प्राप्त हुए।

रिवाज

एक गाँव में कन्दन नामक एक गरीब किसान था। वह मेहनत-मजदूरी करके अपना पेट पालता था। एक बार कन्दन ने अपनी झोंपडी के आगे तरबूजे के दो पौधे लगाये। ३, ४ महीनों के बाद उनमें नौ बढ़िया फल लगे। उन्हें बेचकर एक कंबल खरीदने के ख्याल से कन्दन उनको एक पुराने दुपट्टे में लपेट कर हाट में बेचने चल पड़ा।

हाट के पहरेदार ने अपना रिवाज बताकर कन्दन के हाथ से एक तरबूज ले लिया। इसी प्रकार सरकारी कर्मचारी, मैनेजर वगैरह नें अपना अपना रिवाज बताकर कन्दन को धमका कर उसके सारे तरबूज हड़प लिये। बेचारे कन्दन ने निकट के बड़े अधिकारी के पास जाकर अपने प्रति जो अन्याय हुआ था, उसकी शिकायत की। इसपर वह अधिकारी क्रोध में आया और बोला—"अबे कम्बख्त! इतने सारे दुष्टों को रिवाज देकर मेरे पास खाली हाथ लौट आये हो? उस दुपट्टे को यहाँ पर छोड़ कर चले जाओ।"

बेचारा कंदन लाचार होकर अपने पुराने दुपट्टे को वहाँ छोड़ मारे दुख के अपने घर की ओर लौट पड़ा।
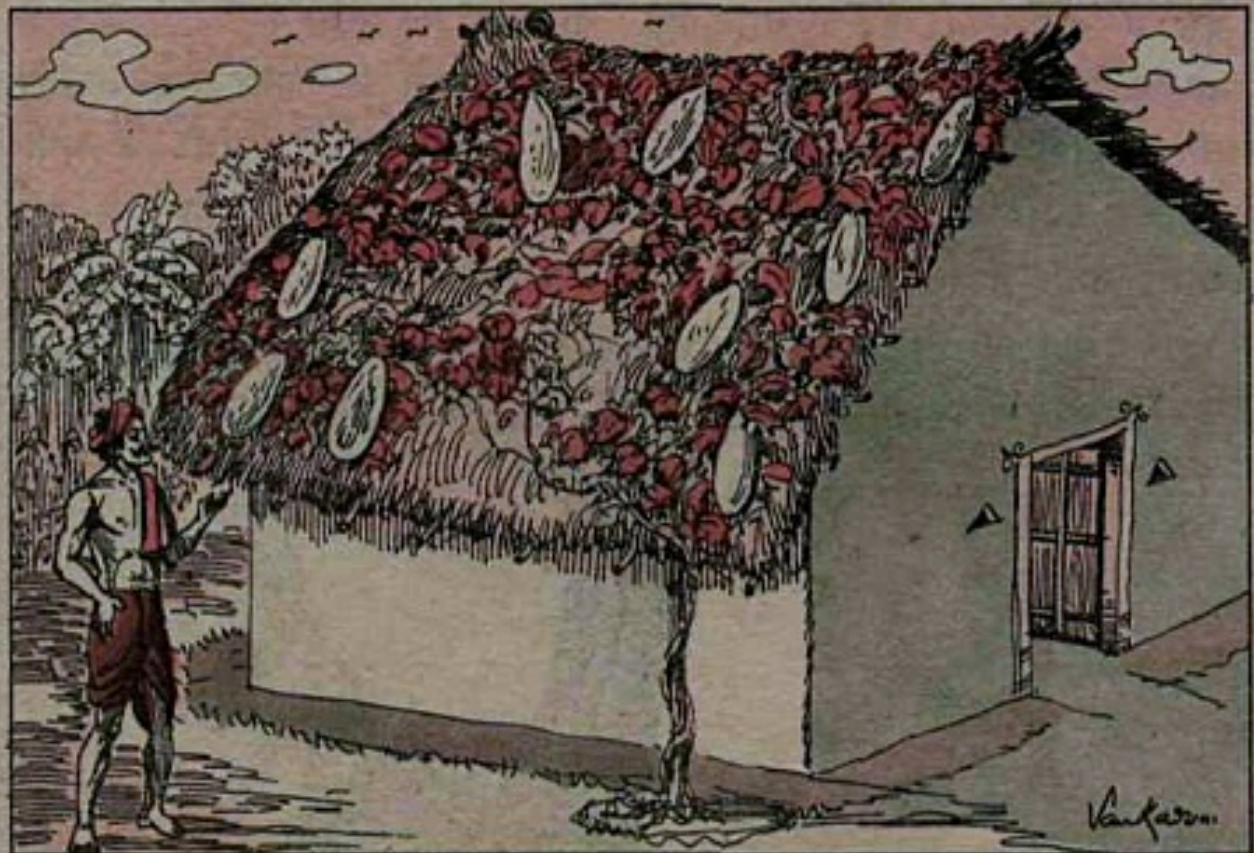
केशवती का जूड़ा

सोनापुर की राजकुमारी केशवती बड़ी सौंदर्यवती थी। बारह वर्ष की केशवती का सबसे बड़ा आकर्षण उसका जूड़ा था। उसके केश घने, काले और लंबे थे। इसलिए उसके जूड़े के बारे में सारे राज्य में बड़ी चर्चा थी। केशवती को स्वयं अपने केशों पर नाज़ था।

केशवती इकलौती बेटी थी। इसलिए राजदंपति ने अत्यंत लाड़-प्यार से उसका पालन-पोषण किया। रानी तो अपनी पुत्री के बाल संवारना, वगैरह काम दासियों को न सौंपकर वह स्वयं किया करती थी। वह केशवती के केशों में साफ़ नारियल का तेल ही लगाती थी।

एक दिन केशवती तेल के कोल्हू के पास गई। बैलों का कोल्हू को चलाना, नारियल का कोल्हू में घिसना, कोल्हू के भीतर तेल का बूंद-बूंद बनकर गिरना इत्यादि केशवती ने देख लिया। इसे देखने पर केशवती के मन में तेल के प्रति घृणा पैदा हो गई। इतने में कोल्हू पर रेंगनेवाली एक छिपकली कोल्हू में गिर गई। केशवती चीखकर बेहोश हो गई।

उस दिन से केशवती के मन में तेल के प्रति असहनीय घृणा पैदा हो गई। वह नारियल के तेल को बालों में लगाना बिलकुल पसंद न करती थी। रानी ने अनेक प्रकार से उसको समझाया, राजा ने भी राजकुमारी को मनाने की बड़ी कोशिश की। मगर कोई फ़ायदा न रहा। आखिर राजा ने कोई दूसरा तेल लगाने की सलाह दी। पर केशवती के मन में सभी तेलों के प्रति घृणा पैदा हो गई। उसके केश अपनी चमक खोकर रेशों के समान हो गये।

श्री ए. सी. सरकार, जादूगर

"बेटी! तुम ज़रा भी समझने की कोशिश नहीं करती हो?" रानी ने कहा।

"मैंने सब कुछ समझा। पर तेल अपने बालों में आइंदा कभी नहीं लगाऊँगी।" केशवती ने कहा।

"तेल न लगाओगी तो बाल कैसे बढ़ेंगे?" रानी ने पूछा।

केशवती ने एक पौधे में पानी के बदले तेल डालना शुरू किया। जिससे शीघ्र ही वह पौधा मर गया।

"देखा है न, माँ? किसी के बढ़ने तथा तेल में कोई संबंध नहीं है।" केशवती ने अपनी माँ से कहा। रानी क्या जवाब देती? चुप रह गई।

दरबारी वैद्यों ने आयुर्वेद के श्लोक पढ़कर बताया कि केशों के बढ़ने के लिए तेल चाहिए। मगर केशवती के निर्णय को बदलना उन से संभव न हुआ।

यह समाचार शीघ्र ही रजतपुर में पहुँचा। रजतपुर सोनापुर के पड़ोस में ही था। दोनों देशों के राजा मित्र भी थे। बहुत दिन पूर्व ही यह निर्णय हो चुका था कि केशवती का विवाह रजतपुर के राजकुमार कांचन के साथ किया जाय।

कांचन अब अट्ठारह वर्ष का युवक था। अनेक विद्याओं में वह प्रवीण था। उसने अपनी होनेवाली पत्नी के बारे में सुना और उसका मन बदलने का निश्चय कर यह समाचार सोनापुर के राजा के पास

भेजा। राजा ने उसे शीघ्र आने का संदेशा भेजा।

कांचन के आने की वार्ता सुनकर केशवती बहुत प्रसन्न हुई। बचपन में वह अकसर सोनापुर में आया करता था और दोनों मिलकर खुशी के साथ खेला करते थे। लेकिन जब दोनों की उम्र बढ़ती गई, तब उन के बीच घनिष्टता भी घटती गई।

कांचन ने सोनापुर में प्रवेश करके केशवती के साथ नये ढंग से चर्चा शुरू की :

"केशवती, क्या तुम नहीं जानती हो कि दिमागी काम तेजी से करने के लिए तेल की कैसी आवश्यकता होती है? वह दिमाग के लिए इंधन के समान है। उसके बिना दिमाग ठीक से काम नहीं देता, बल्कि मनुष्य पागल हो जायगा।" कांचन कुमार ने कहा।

"मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकती। पंडित हरिशास्त्री का सिर तो गांजा है। वे कभी तेल नहीं लगाते।" केशवती ने उलटा प्रश्न किया।

"इस समय वे अपने सिर में भले ही तेल न लगाते हो, लेकिन बचपन में तो लगाते थे?" कांचन ने पूछा।

"इसीलिए उनका सिर गांजा हो गया है।" केशवती ने झट कह दिया।

"छोटे प्राणी होते हुए भी चींटियाँ बड़ी अक़लमंद होती हैं। तेल की एक भी बूंद दिखाई दे तो कई चींटियाँ वहाँ पहुँच

जाती हैं और सारा तेल पी डालती हैं ।" कांचन ने कहा ।

"हाँ! मैंने कई बार देखा है । चीनी के वास्ते भी चींटियों के जमा होते मैंने अनेक बार देखा है । इसलिए क्या मैं चीनी की शरबत वालों में लगा कर अपने बालों को बढ़ाऊँ?" केशवती ने इतमीमान से उलटा प्रश्न पूछा ।

कांचन ने अब निर्णय कर लिया कि वार्तालाप के द्वारा केशवती को मनवाना संभव नहीं है, इंद्रजाल का प्रयोग करना होगा । यह निश्चय करके प्रसंग बदलते हुए बोला-"हमारे बचपन के दिन कैसे मजे से कट जाते थे, तुम्हें याद है न केशवती? मैं भुलाने की चेष्टा करके भी भूल नहीं पाता ।"

"क्यों नहीं? वे दिन बड़े ही अच्छे थे । चौबीसों घंटे खेल-तमाशे होते थे ।" केशवती ने उत्तर दिया ।

"कमबख्त तेल की बात छोड़ दो । हम फिर ऐसे खेल खेलेंगे ।" कांचन ने पूछा ।

"इस उम्र में? क्या तुम पागल हो गये हो?" केशवती ने कहा ।

"तुम्हें खेलने की जरूरत नहीं, लेकिन मेरे खेलते तुम्हें देखने में कोई आपत्ति नहीं है न?" कांचन ने पूछा ।

"नहीं, जरूर देखूंगी! तुम पहले जैसे अपना इंद्रजाल दिखाओ ।" केशवती ने कहा ।

"मैं तुम को एक नया इंद्रजाल दिखाऊँगा । लेकिन मेरी एक शर्त है! वह शर्त तुम्हें पसंद आ गई तो मैं जो काम करने को कहूँगा तुम्हें करना होगा!" कांचन ने पूछा ।

"जरूर करूंगी!" केशवती ने कहा ।

दूसरे दिन सवेरे कांचन कुमार राजा, रानी, तथा मंत्रियों को साथ लेकर अपना इंद्रजाल दिखाने केशवती के कक्ष में आ पहुँचा । उसने मेज पर एक बहुत बड़ी पानी से भरी नांद रखी । तब एक मोटे गत्ते का टुकड़ा मछली की आकृति में काट

दिया। उस मछली की आकृति की लंबाई तीन इंच की थी, उसकी चौड़ाई डेढ़ इंच की। उस मछली के मध्य भाग में एक छेद किया और उसके साथ एक टुकड़ा काट कर रखा। तब कांचन ने मछली की उस आकृति को राजा, रानी तथा केशवती को दिखाया। फिर उसको नांद के पानी में तिरने दिया, तब केशवती से पूछा–"केशवती! तुम इस मछली को अपने हाथ से ढकेले बिना और उस पर फूंक लगाये बिना तैरने लायक़ बना सकती हो?"

केशवती ने आगे बढ़कर बड़ी देर तक उसे देखा, तब कहा कि उसके द्वारा ऐसा करना संभव नहीं है।

"मैं जो करने जा रहा हूं, यदि वह तुम को पसंद आएगा तो मेरे कहे अनुसार करने का तुमने जो वचन दिया, वह तुम्हें याद है न?" कांचन ने पूछा।

"हां, मुझे याद है! तुम अपना इंद्रजाल दिखाओ तो।" केशवती ने कहा।

कांचन ने एक बोतल निकाली। उसमें से एक बूंद द्रव मछली के मध्य भाग में स्थित छेद में डाल दिया। मछली अपने आप उस नांद में इधर-उधर तैरने लगी। सब लोग प्रसन्न हो उठे।

केवशती ने खुशी के मारे मुस्कुराते हुए पूछा–"बताओ, मुझे क्या करना होगा?"

"इस बोतल में जो अद्भुत द्रव ,पदार्थ है, उसकी वजह से मछली तैर सकी। मैं तुम से यही चाहता हूं कि तुमको यह अद्भुत द्रव प्रति दिन अपने सिर पर मलना होगा। इस बोतल के समाप्त होने पर दूसरी बोतल भिजवा दूंगा! ठीक है न?" कांचन ने कहा।

"अच्छी बात है! ऐसा ही मलूंगी।" केशवती ने झट कह दिया।

राजा तथा रानी ने हंसते हुए एक दूसरे की ओर देखा। वे जानते थे कि उस बोतल में सुगंधित नारियल का तेल भरा है। उस नारियल के तेल की बूंद ने ही कागज की मछली को तिरने लायक़ बना दिया था।

यथा राजा तथा प्रजा

प्राचीनकाल में विजयपुरी पर राजा विक्रमसिंह शासन करता था। वह शासन के कार्यों में अपार दक्षता रखता था। उसके मंत्री भी बड़े ही बुद्धिमान थे। वह राज्य सुख और शांति के लिए प्रसिद्ध था।

एक बार राजा विक्रम अपने राज्य में भ्रमण कर रहा था। उस वक़्त देश के एक कोने में स्थित एक गाँव में अत्यंत प्राचीन सोमनाथ का मंदिर उसे दिखाई दिया। अनेक शताब्दियों के पूर्व वह मंदिर उन्नत दशा में था, पर अब वह शिथिल हो चुका था।

उस मंदिर को उजड़ी हालत देख राजा के मन में अपार दुख हुआ। राजा ने निर्णय कर लिया कि उस मंदिर का उद्धार करके उसको प्राचीन काल की ख्याति प्राप्त कराई जाय!

यह विचार राजा ने अपने मंत्रियों के सामने प्रकट किया। मंत्रियों ने सलाह दी कि इस कार्य में काफ़ी धन खर्च हो जाएगा। अलावा इसके मंदिर के पुनरुद्धार के पश्चात उसके व्यय के लिए निष्कर का इंतज़ाम करना होगा। गाँव की उन्नति करनी होगी। यात्रियों की सुविधा के लिए आवश्यक प्रबंध करना होगा। मंदिर की प्रसिद्धि फैलने तक राजकोश के द्वारा उसका खर्च उठाना होगा।

"महाराज! फिलहाल हमारे खज़ाने में इतना धन नहीं है।" मंत्रियों ने कहा।

"जब हमने निर्णय किया तब इसे अमल न करेंगे तो मंदिर का पुनरुद्धार करना कभी संभव न होगा। यह व्यय हम खज़ाने से न लेकर एक नये कर के द्वारा वसूल करेंगे। वह कर केवल धनियों तथा व्यापारियों से ही वसूला जाएगा। वे

अरविंद कनौजिया

इस भार को उठाने की स्थिति में होंगे। साधारण प्रजा को कष्ट देने की कोई जरूरत न होगी।" राजा ने कहा।

मंत्रियों ने इस सुझाव का समर्थन किया। दूसरे ही दिन नये कर के बारे में ढिंढोरा पिटवाया गया।

राजा जब भी नया कानून अमल करता, तब अपना वेश बदल कर जनता का विचार जानने का प्रयत्न करता था। इस आदत के अनुसार ढिंढोरा पिटवाने के बाद दूसरे दिन राजा अपना वेष बदल कर गलियों में घूमने लगा।

दुपहर के समय एक युवक एक दूकान के आगे खड़े हो दूकानदार से झगड़ा कर रहा था। राजा ने इसे देख लिया। उस युवक की बातों से राजा को मालूम हुआ कि वह एक धनी के यहाँ काम करता है। नये कर के लगाने के कारण उस अमीर ने युवक का वेतन घटा दिया है। वह युवक पहले ही वेतन पर्याप्त न होने की वजह से परेशान था, उलटे उसे मालूम हुआ कि व्यापारियों ने चीज़ों के दाम भी बढ़ा दिये हैं। राजा के देखते वह युवक अपने लिए आवश्यक चीज़ों में से आधी आधी खरीद कर चला गया।

राजा ने जो सोचा था, वह उसके विचार के उलटा हुआ। उसने सोचा कि उसने अमीरों पर ही कर लगाया है, मगर कर का भार धनियों ने साधारण प्रजा पर डाल दिया। राजा ने अपने महल

में लौटते ही मंत्रियों को बुलवाकर कहा– "फिर से आप लोग यह ढिंढोरा पिटवाइये कि नये कर अमल नहीं कर रहे हैं। साथ ही चीज़ों का भाव बढ़ानेवाले व्यापारियों को कठिन दण्ड दिया जाएगा।" इसके बाद राजा ने जिस घटना को अपनी आँखों से देखा था, उसे मंत्रियों को बताया।

"महाराज! तब तो मंदिर के पुनरुद्धार का कार्यक्रम आप ने स्थगित कर दिया?" मंत्रियों ने राजा से पूछा।

"नहीं, नहीं। यह कार्यक्रम कभी बंद न होगा। इसका पूरा खर्च मैं स्वयं वहन करूँगा। राजमहल में प्रति नित्य अपार अपव्यय होता जा रहा है। शिकार के पीछे तथा मनोरंजन के लिए जो धन बेकार खर्च हो रहा है, उसे बंद करके राज परिवार भी साधारण प्रजा की भाँति जीवनयापन करे तो मंदिर के पुनरुद्धार का कार्य संभव होगा। मंदिर का यह कार्य समाप्त होने तक मैं इस नियम का पालन करूँगा।" राजा ने बताया।

मंत्री राजा के विचार सुनकर चकित रह गये और बोले–"महाराज! हम भी दावत तथा मनोरंजन के कार्यक्रम बंद करके अपना खर्च घटायेंगे और मंदिर के पुनरुद्धार के कार्य में हाथ बँटायेंगे।"

मंत्रियों का निर्णय सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ। मंत्रियों ने स्वयं अपने वेतनों में से अधिकांश हिस्सा मंदिर की निधि में जमा कर दिया। राज कर्मचारियों ने भी उनका अनुसरण किया। यह समाचार सारे नगर में फैल गया। जनता ने नगर के चौरास्तों पर हुंडियों का प्रबंध किया। उसमें लोग स्वेच्छा से धन डालने लगे।

इसे देख नगर के धनी व व्यापारी लज्जित हो उठे। उन लोगों ने भी बड़ी बड़ी रक़में चन्दा के रूप में दीं। इस प्रकार बहुत-सा धन जमा हो गया। सोमनाथ का मंदिर पहले से ही ज्यादा अच्छे ढंग से तैयार हो गया। मंदिर के लिए आवश्यक सारे प्रबंध किये गये। शीघ्र ही वह एक प्रसिद्ध यात्रा-केन्द्र के रूप में बदल गया।

पुराण-श्रवण

एक गाँव में एक चोर था। मरते वक़्त उसने अपने चारों पुत्रों को बुलाकर सलाह दी—"तुम लोग मंदिरों की ओर मत जाओ। पुराण वगैरह मत सुनो।"

एक दिन चारों राजा के क़िले में चोरी करने के लिए निकल पड़े। रास्ते में कहीं पुराण का पठन उनके कानों में न पड़े, इस ख्याल से सब ने अपने कानों में रूई ठूँस दी। जब वे लोग क़िले की ओर बढ़ रहे थे, तब एक के कान की रूई खिसक कर गिर गई। उस वक़्त समीप के मंदिर में पुराण का पठन चल रहा था।

कथावाचक यों कह रहा था—"देवता या भूत जब हमारे लोक में आते हैं, तब उनके पैर धरती पर नहीं पड़ते। उनकी छाया भी ज़मीन पर नहीं पड़ती।"

ये बातें सुनने पर चोर इस तरह कांप उठा, मानों उस पर गाज गिर गई हो, उसने फिर अपने कान में रूई ठूँस ली, और आगे बढ़ गया। इसके बाद वे बड़ी होशियारी से क़िले में पहुँचे। खजाने से गहने व सिक्के चुरा लिये। घर पहुँच कर उस धन को एक जगह गाड़ दिया।

दूसरे दिन सवेरे राजा को चोरी की खबर लग गई। चोरों का पता लगाने की जिमनेदारी मंत्री पर पडी। मंत्री के पता लगाने पर मालूम हुआ कि गाँव के बाहर नारियल के बगीचे के बीच एक झोंपड़ी है, उस में चार भाई रहते हैं जिनका पेशा चोरियाँ करना ही है। मंत्री ने एक उपाय किया। यदि उन चारों भाइयों ने चोरी की हो तो चोरी का माल झोंपड़ी में न होगा। उन्हें बन्दी बनाकर फैसला करने का प्रयत्न भी करे तो भी चोरी साबित न होगी। चोरी का माल भी हाथ न लगेगा। इसलिए उनकी

रमेश कमरानी

चोरी को साबित कर दिया जाय, साथ ही चोरी का माल भी हाथ लगे।

मंत्री ने अति भयंकर रूप से काली माता का वेष बनाया, हाथ में छुरी लेकर अर्द्ध रात्रि के समय नारियल के बगीचे में स्थित झोंपड़ी के पास जाकर भीकर गर्जन किया। वह गर्जन सुनकर चारों भाई दिया लेकर झोंपड़ी से बाहर आये। महा काली की आकृति देख घबरा गये। सब लोगों ने पूछा–"माताजी! आप कौन हैं? आप को क्या चाहिए?"

मंत्री ने उन लोगों से कहा–"अरे, मैं काली माता हूँ! राजा के क़िले में से तुम लोग जो धन चोरी कर लाये हो, सब यहाँ पर रख दो। वरना तुम लोगों का वध करके तुम्हारा ख़ून पी जाऊँगी।"

चोरों में से तीन ये बातें सुन थर-थर काँप उठे। लेकिन चौथा व्यक्ति झोंपड़ी के भीतर गया, लाठी ले बाहर आकर बोला–"तुम कौन हो? काली माता हो? यहाँ से भाग जाओगे या नहीं? वरना तुम्हारा सिर फोड़ डालूँगा।"

मंत्री वहाँ से भाग खड़ा हुआ। तब बाक़ी तीनों ने चौथे से पूछा–"तुम को कैसे मालूम हुआ कि वह कोई मनुष्य है?"

"हम लोग जब चोरी करने जा रहे थे, तब मैंने भूल से पुराण सुना। कथावाचक कह रहा था कि देवता तथा भूत पृथ्वी पर आते हैं तो उनके पैर धरती पर नहीं पड़ते और उनकी छाया भी ज़मीन पर नहीं पड़ती। अब जो आया था, वह कोई मनुष्य है। उसके पैर ज़मीन पर ही थे। हमारे दिये की रोशनी में उसकी छाया ज़मीन पर पड़ी। इसे देख मैंने जान लिया कि वह एक मनुष्य है।" चौथे ने जवाब दिया।

"अरे, तुम ने थोड़ा-सा पुराण सुना तो हमारा बहुत बड़ा लाभ हुआ। हम रोज़ पुराण सुनेंगे तो हमारा और कितना लाभ होगा!" यों सोच कर वे चारों भाई रोज़ पुराण सुनने लगे। इसके बाद चोरी करना छोड़ वे भी अच्छे आदमी कहलाये।
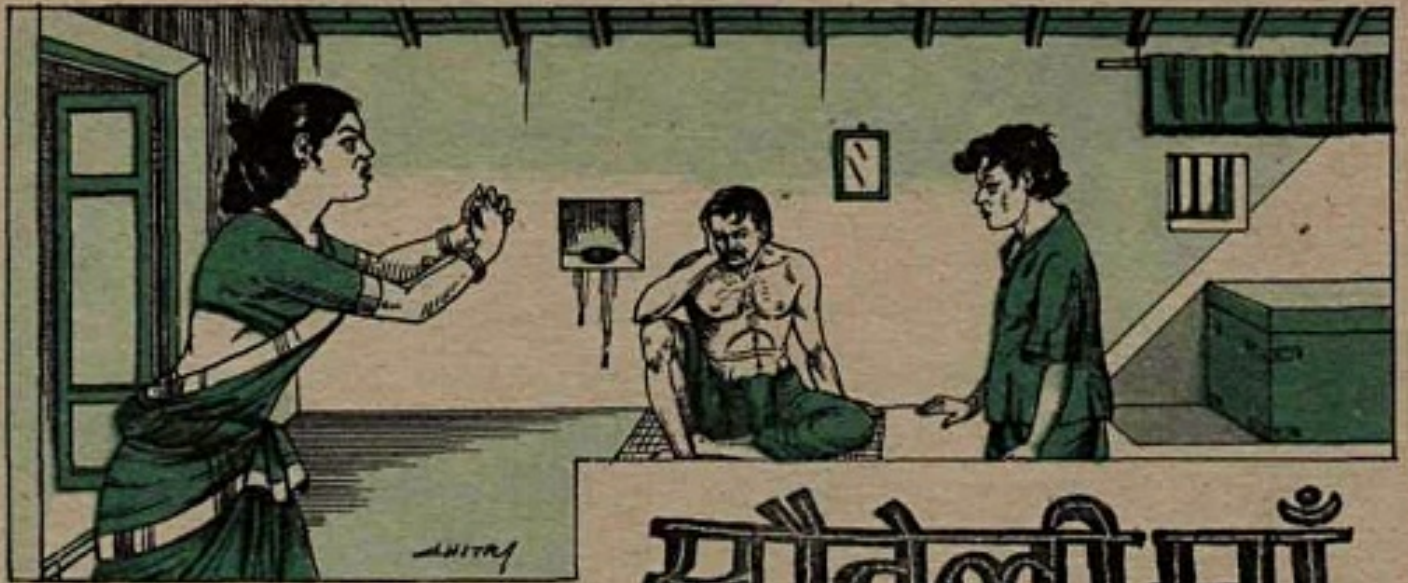
सौतेली माँ

एक गाँव में रतनलाल नामक एक बहरा युवक था। उसकी माँ मर गई थी जिससे उसके पिता ने दूसरी शादी की। रतनलाल को सौतेली माँ खूब सताया करती थी। खेत के कामों के साथ उसे घर के काम-काज भी करने पड़ते थे। बैल की तरह काम करने पर भी उसकी सौतेली माँ उस पर दोषारोपण करती कि वह बड़ा आलसी है, खीझ उठती, गालियाँ भी सुना देती।

अपने पुत्र की यातनाएँ देखकर भी रतनलाल का पिता अपनी दूसरी पत्नी के भय से उसे डाँटता न था, बल्कि मन ही मन वह दुखी होता था।

एक दिन रात को रतनलाल मवेशियों की झोंपड़ी में सो रहा था। आधी रात के वक़्त जब उसकी आँखें खुलीं तो देखा कि सोतेली माँ एक लाठी ले उसकी ओर बढ़ी चली आ रही है। रतनलाल ने सोचा कि सौतेली माँ उसको मारने के लिए आ रही है, वह डर गया और अंधेरे में कहीं भाग गया।

आखिर रतनलाल एक नगर में पहुँचा। उस नगर का राजा बड़ा ही भोला था। राजा ने रात को एक सपना देखा। वह यह था कि बड़ी रानी की पुत्री को छोटी रानी मार डालने का प्रयत्न कर रही है। वह जाग पड़ा, मन ही मन घबराने लगा।

दूसरे दिन दरबारियों को संबोधित कर राजा ने कहा—"कल रात को मैंने एक सपना देखा है। उस सपने का समाचार अगर कोई बताएगा तो उसको एक हज़ार रुपयों का पुरस्कार दिया जाएगा।"

दरबारी सब मौन रह गये। वे सब राजा के भोलेपन से भली भांति परिचित

कविता त्रिपाठी

थे। सब को मौन देख राजा ने मंत्री की ओर मुड़कर कहा–"मेरे सपने का समाचार बता सकनेवाला व्यक्ति कोई शायद दरबार में नहीं है। इस बात का ढिंढोरा पिटवाइए।"

ढिंढोरा जब पिटवाया जा रहा था, उस वक़्त रतनलाल उस नगर में पहुँचा। ढिंढोरा तो उसने सुना, परंतु वह बहरा था, इसलिए ढिंढोरा का समाचार उसे साफ़ सुनाई न दिया, उसे लगा कि जनता अपनी तक़लीफें राजदरबार में जाकर सुनावे, इसी बात का ढिंढोरा पीटा जा रहा है।

दूसरे ही क्षण वह दरबार का पता लगाकर वहाँ पहुंचा। द्वारपाल ने रतनलाल को रोक कर पूछा–"क्या तुम राजा के सपने के बारे में बता सकते हो?"

उनकी बातें सुनाई न दीं, फिर भी रतनलाल ने कहा–"जी हाँ।"

द्वारपाल ने रतनलाल को राजा के सामने हाज़िर किया।

"क्या तुम मेरे सपने के बारे में बता सकते हो!" राजा ने पूछा।

रतनलाल ने सोचा कि राजा उसे अपनी तक़लीफ़ें सुनाने के लिए कह रहा है, वह बोल उठा–"महाराज! सौतेली माताओं की ईर्ष्या, उनके द्वारा दी जाने वाली यातनाएँ आनादि काल से चली आ रही हैं। क्या उनके बारे में विस्तार से सुनाने की ज़रूरत है? फिर भी..." वह कुछ और कहने को हुआ।

मगर राजा ने प्रसन्न हो कहा–"शाबाश!" फिर क्या था, उसको एक हज़ार रुपये का पुरस्कार देकर भेज दिया।

राजा ने उसकी पूरी कहानी सुने बिना ही पुरस्कार दे दिया। इस पर खुश हो रतनलाल घर लौट आया और सारा समाचार अपने पिता को सुनाया। ये बातें सुनने पर रतनलाल की सौतेली माँ डर गयी कि उसे राजा का आश्रय प्राप्त है, उस दिन से रतनलाल को सताना बंद किया। इस तरह रतनलाल विपदा से बच रहा।
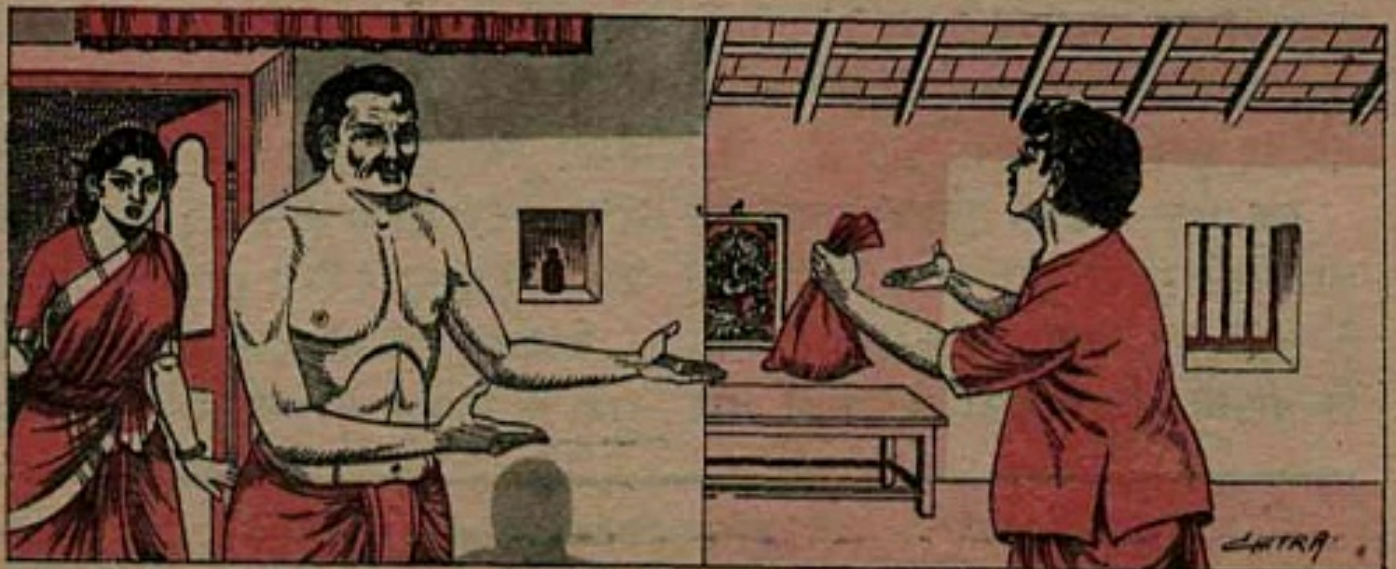
मायावी के हाथों में वाली का वध न हुआ, बल्कि वाली ने ही मायावी को मार डाला और लौट आया। वाली को देखते ही सुग्रीव ने आदरपूर्वक प्रणाम किया। मगर वाली ने सुग्रीव को आशीर्वाद नहीं दिया, किंतु क्रोध में आकर उसकी निंदा की। सुग्रीव ने अपना किरीट निकाल कर वाली के चरणों पर रखकर साष्टांग प्रणाम किया।

वाली के क्रोध को शांत करने के लिए सुग्रीव ने नम्र शब्दों में कहा—"भैया, तुम शत्रु का वध करके लौट आये। इससे बढ़कर हमारे लिए प्रसन्नता की बात क्या हो सकती है? मैं बड़ी देर तक सुरंग के पास खड़ा रहा। उस गुफा में से खून बाहर आया। उसे देख मुझे जो दुख हुआ, उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता।

उस समय मैं गुफा पर एक शिला ढक कर किष्किंधा को लौट आया। मैं सचमुच राज्याभिषेक कराना नहीं चाहता था। जनता तथा मंत्रियों ने हठ करके मेरा राज्याभिषेक किया। अब तुम लौट आये, तुम्हीं हमारे राजा हो! मैं युवराजा हूँ। मुझे गलत न समझो।"

मगर वाली ने सुग्रीव की बातों पर ध्यान न दिया। उसने सब को बुला भेजा। सब के समक्ष सुग्रीव की निंदा करते हुए कहा—"मैं और यह, हम दोनों मायावी का पीछा करते गये। मायावी एक भयंकर गुफा में घुस गया। मैंने

३. सुग्रीव के साथ मैत्री

शपथ की कि उसका वध करके ही मैं किष्किधा को लौटूंगा, तब सुग्रीव को गुफा के पास नियुक्त करके में अन्दर चला गया। गुफा में जल्दी मायावी मेरे हाथ न लगा। बड़ी मुश्किल से खोज कर मैंने उसको पकड़कर मार डाला, उसके अनुचरों का वध किया, लौटकर आया तो मुझे गुफा का द्वार दिखाई न दिया। मैंने सुग्रीव को पुकारा, लेकिन मुझे कोई जवाब न मिला। इस दुष्ट ने राज्य के लोभ में पड़कर गुफा के द्वार को बंद किया और मेरे बाहर आने से मुझे रोकना चाहा। गुफा पर ढंकी शिला को लात मारकर फोड़ डाला, तब मैं बाहर आया।"

यों दोषारोपण करके वाली ने सुग्रीव को अपने देश से निकाला। सुग्रीव की पत्नी तारा को अपनी पत्नी बना लिया। इस प्रकार सुग्रीव अपनी पत्नी को खोने के साथ नाना प्रकार की यातनाएँ झेल, वाली के डर से ऋष्यमूक पर्वत पर जा छिपा। इस वनवास के समय सुग्रीव के साथ हनुमान, जांबवान, मैंद तथा द्विविद नामक चार वानर उसके मंत्री बनकर रहें।

सुग्रीव के साथ रहते वक़्त ही हनुमान का श्रीराम के साथ परिचय हुआ। वह यों हुआ : ऋष्यमूक पर्वत पर रहनेवाले सुग्रीव ने एक दिन पंपा सरोवर के बाजू में स्थित वन में दो मानवों का संचार करते देखा। वे धनुष और बाण धारण कर देखने में अद्भुत लग रहे थे।

उन्हें देखते ही सुग्रीव डर गया। उसने सोचा कि वे वाली के द्वारा भेजे गये व्यक्ति होंगे। वाली को यह शाप प्राप्त है कि वह ऋश्यमूक पर्वत पर नहीं आ सकता, इसलिए उसका वध कराने के लिए वाली ने इन दोनों को भेजा होगा। इस विचार के आते ही वह विकल हो कहीं भाग जाने की कोशिश करने लगा। मगर भागकर कहाँ जाय? यही उसकी चिंता का कारण था। उस वक़्त हनुमान ने सुग्रीव से कहा—"वाली यहाँ पर नहीं आ

सकता। उसके आने के निशान तक नहीं हैं। आप डरते क्यों हैं?"

"मैं यह नहीं कहता कि वाली यहाँ आये हैं। उन दो मानवों को देखो। उनके पास धनुष, बाण और खड्ग भी हैं, उन्हें देखने पर हर किसी को डर लगेगा ही। मेरा संदेह है कि वाली ने उन्हें मेरा वध करने भेजा है। राजा के कई सहायक होते हैं। हमें गुप्तचरों पर निगरानी रखनी चाहिए, वरना मर जायेंगे। राजा अपने शत्रुओं का नाश करने के लिए अनेक प्रकार के उपाय करते हैं। तिस पर भी वाली महान अक़्लमंद हैं। सुनो, हनुमान! तुम जाओ। उनका वार्तालाप सुनकर पता लगाओ कि वे लोग भले आदमी हैं या दुष्ट हैं। यह भी पूछो कि जंगल में वे आयुध धारण कर घूम क्यों रहे हैं? अगर मेरे प्रति उनके मन में कोई द्वेष भाव हो तो उसे दूर करो और मेरे प्रति सहानुभूति पैदा करो।" सुग्रीव ने समझाया।

सुग्रीव की बात मानकर हनुमान राम और लक्ष्मण के निकट पहुँचा। वहाँ जाने के पूर्व हनुमान ने अपने वानर रूप को एक ब्रह्मचारी के रूप में बदल लिया, तब विनयपूर्वक बोला—"महानुभाव! आप को देखने पर राजर्षि, देवताओं के समान तथा तपोव्रती जैसे लगते हैं। आप इस पंपा सरोवर के तट पर कैसे आये? आप लोग कौन हैं? आप को देख यहाँ के जंगली जानवर डर रहे हैं। आप की विशाल भुजाओं तथा हाथियों की सूँडों जैसे हाथों को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि आप समस्त प्रकार के आभूषण धारण कर राज्यों का शासन करने योग्य हैं!"
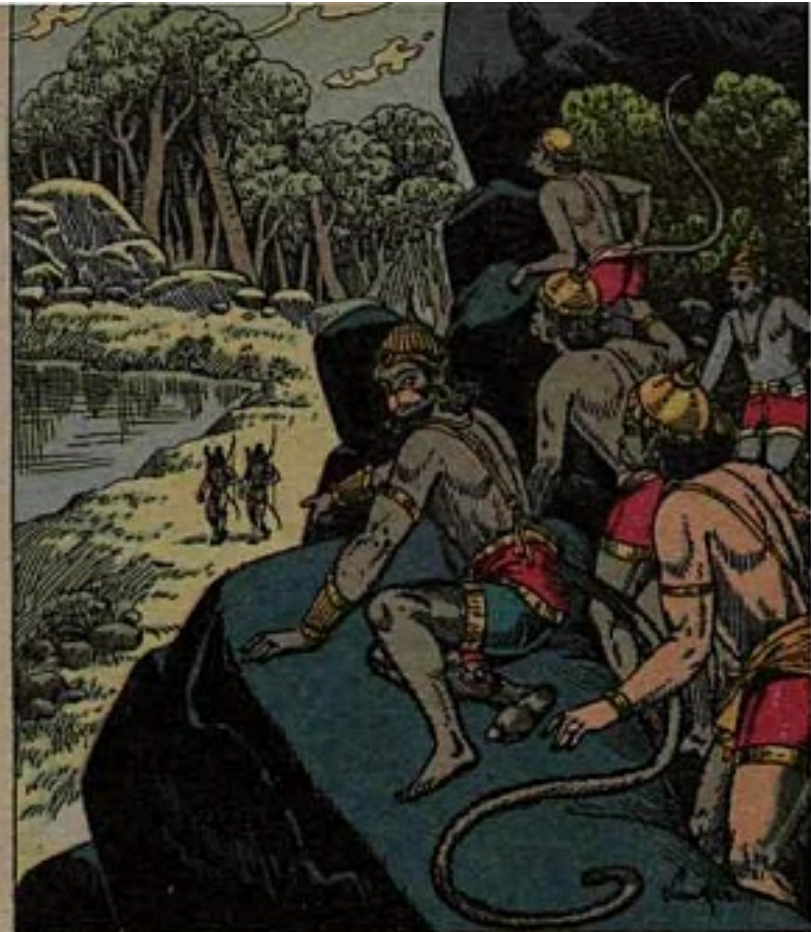
ये बातें सुन राम और लक्ष्मण मौन रह गये। हनुमान ने ही पुनः यों कहा :

"सुग्रीव नामक वानर राजा महान धर्मात्मा तथा बलवान हैं, अपने भाई के द्वारा निकाले जाकर बड़ी यातनाएँ झेल रहे हैं। मैं उनका मंत्री हूँ। हनुमान

नामक वानर हूँ। सुग्रीव के आदेश पर ऋष्यमूक पर्वत पर से यहाँ आया हूँ। इसलिए ब्रह्मचारी का यह वेष धारण कर आया हूँ। मैं सर्वत्र जाने की शक्ति रखता हूँ। सुग्रीव हृदय से आप लोगों की मैत्री चाहते हैं।"

अंतिम वाक्य सुनते ही रामचन्द्र का मुखमण्डल खिल उठा। कबंध ने श्रीराम को बताया था कि रावण के द्वारा हरण की गई सीता को फिर से प्राप्त करने के लिए वह सुग्रीव की सहायता प्राप्त करे।

इस पर राम ने लक्ष्मण से कहा— "भैया, हम जिस की खोज में थे, वह अपने निकट आप आया। हम जिस सुग्रीव को देखना चारते थे, उसी ने हमारे पास दूत भेजा। यह बड़ा ही बुद्धिमान मालूम होता है। वार्तालाप के समय इसका चेहरा निर्मल प्रतीत हो रहा है। इसलिए तुम इसके साथ वार्तालाप करो।"

लक्ष्मण ने हनुमान से कहा—"हम सुग्रीव के गुणों से पहले ही परिचित हैं। हम उसी सुग्रीव की खोज करते आ रहे हैं। तुम्हारे कहे अनुसार हम सुग्रीव से मैत्री करेंगे।"

हनुमान ने सोचा कि श्रीरामचन्द्र का सुग्रीव के साथ कोई कार्य है, इसलिए वे सुग्रीव को उसका राज्य वापस दिलाने में रामचन्द्र जी सहायता दे सकते हैं। इस विचार के आते ही प्रसन्न हो हनुमान ने पूछा—"आप दोनों इस भयंकर दण्डकारण्य में क्यों आये?"

रामचन्द्र ने लक्ष्मण को अपना वृत्तांत सुनाने का आदेश दिया, तब लक्ष्मण ने यों कहा: "ये महाराजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्रीरामचन्द्र जी हैं। ये राजा बननेवाले थे। अपने पिता के वचन का पालन करने वाले हैं। ऐसे महान व्यक्ति राज्य भ्रष्ट हो मेरे साथ वनवास में आये हैं। हमारे साथ इनकी अर्द्धांगी सीता देवी जी भी वनवास में आई हैं। मैं इनका छोटा भाई हूँ। मेरा नाम लक्ष्मण है। मैं इन

रामचन्द्रजी के महान गुणों का दास हूँ। हमारी अनुपस्थिति में कोई राक्षस मेरी भाभी का अपहरण कर ले गया है। हम उसका नाम तक नहीं जानते। हमें एक दूसरे राक्षस ने बताया है कि सीताजी का अपहरण करनेवाले राक्षस का पता सुग्रीव के द्वारा हमें लग जाएगा। तुमने पूछा, इसलिए मैं अपना वृत्तांत साफ़-साफ़ बता रहा हूँ। बड़े से बड़े लोगों तक को शरण देनेवाले ये महापुरुष इस वक़्त सुग्रीव की शरण चाहते हैं, सुग्रीव को इन पर अनुग्रह करना होगा..."

इसके उत्तर में हनुमान ने कहा– "हमारे राजा सुग्रीव को ही आप लोगों की शरण में आना चाहिए था, किंतु उनका राज्य तथा उनकी पत्नी को भी वाली ने हरण किया है, इसलिए वे चिंता में डूबे हुए हैं। सीता देवीजी के अन्वेषण में वे आप की सहायता ज़रूर कर सकते हैं।"

इसके उपरांत हनुमान ने उनसे सुग्रीव के पास चलने का अनुरोध किया।

लक्ष्मण ने रामचन्द्रजी से कहा–"हम सुग्रीव के यहाँ जाएँगे। उनकी मदद से हमारा कार्य सफल होगा।"

तत्काल हनुमान अपने ब्रह्मचारी का रूप बदल कर वानर रूप में श्रीराम तथा लक्ष्मण को कंधे पर चढ़ाकर ऋश्यमूक पर्वत पर ले आया। पर सुग्रीव उस समय ऋश्यमूक पर्वत पर न था। भय के मारे वह समीप में स्थित मलय पर्वत पर छिप गया था।

हनुमान मलय पर्वत पर जाकर सुग्रीव से मिला और बोला–"ये दोनों श्रीरामचन्द्र तथा लक्ष्मण हैं। इक्ष्वाकुवंशी हैं। महाराजा दशरथ के पुत्र हैं। रामचन्द्रजी वचन-पालन के हेतु वनवास में आये हैं। उनकी पत्नी को कोई राक्षस उठा ले गया है। इसलिए रामचन्द्रजी आप की शरण में आये हैं। दोनों भाई रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण आप की मैत्री चाहते हैं,

इसलिए इनका स्वागत करके सम्मान कीजिए।"

ये बातें सुन सुग्रीव अत्यंत आनंदित हुआ। वह एक सुंदर मानव का रूप धारण कर रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण के पास आया और बोला—"आप लोगों के बारे में हनुमान ने मुझे सारा वृत्तांत सुनाया। हे राजा राम! आप का मुझ जैसे एक वानर के साथ मैत्री करना मेरे लिए भाग्य की बात एवं लाभदायक भी हैं। आप यदि मेरे साथ मैत्री चाहते हैं तो हमारे नियमानुसार मेरे हाथ में हाथ डालकर मैत्री-धर्म का पालन कीजिए!"

रामचन्द्रजी ने सुग्रीव के हाथ में हाथ डालकर उसके साथ गाढ़ालिंगन किया।

उस वक़्त हनुमान ने अग्नि प्रज्वलित करके उस अग्नि की पूजा की और उसे रामचन्द्रजी तथा सुग्रीव के मध्य भाग में रख दिया। रामचन्द्र तथा सुग्रीव ने उस अग्नि की प्रदक्षिणा की और अग्नि को साक्षी बनाकर मैत्री की।

रामचन्द्रजी ने सुग्रीव से कहा—"इस क्षण से तुम मेरे मित्र बन गये हो! आज से तुम्हारा दुख ही मेरा दुख है। तुम्हारा सुख ही मेरा सुख है।"

इसके बाद सुग्रीव ने घने पत्तोंवाले साल वृक्ष की एक शाखा तोड़कर नीचे डाल दिया। उस पर रामचन्द्रजी के साथ वह भी बैठ गया। लक्ष्मण के बैठने के लिए हनुमान चन्दन की एक डाल तोड़ लाया।

तब सुग्रीव ने विस्तारपूर्वक बताया कि उसके तथा वाली के बीच वैर क्यों हो गया है, फिर दीन स्वर में निवेदन किया—"मैं वाली के भय से त्रस्त हूँ। हे राम! मेरे भय को आप दूर कीजिए।"

रामचन्द्रजी ने वाली एवं सुग्रीव का सारा वृत्तांत सुनकर मुस्कुराते हुए कहा—"मैत्री का फल उपकार ही होता है। तुम्हारी पत्नी का हरण करनेवाले वाली का मैं वध करूँगा।"

इस बात पर सुग्रीव परमानंदित हो बोला–"रामचन्द्रजी! आप की कृपा से मुझे पुनः अपनी पत्नी एवं राज्य प्राप्त हो! इसके वास्ते आप वाली के वध करने का प्रयत्न कीजिए। मैं आप को सीतादेवीजी को लाकर सौंप दूंगा। चाहे वह पाताल में हो या स्वर्ग में। मैं अवश्य उन्हें लाकर आप के हाथ सौंप दूंगा।–हाँ, अब मुझे स्मरण आ रहा है!–मैंने शायद सीताजी को ही देख लिया है। उन्हों ने मुझे तथा मेरे साथ रहनेवाले चार वानर वीरों को देख हमारे सामने आभूषणों की पोटली डाल दी है। मैं उन गहनों को सुरक्षित रख चुका हूँ। शायद आप उन्हें पहचान सकेंगे; देख लीजिए।"

रामचन्द्र ने ये वाक्य सुनते ही बड़ी आतुरता के साथ पूछा–"मित्रवर, शीघ्र उन्हें लाकर मुझे दिखा दो।"

सुग्रीव झट उठकर एक गुफा के भीतर चला गया, सीतादेवीजी के एक वस्त्र में बंधे गहनों की पोटली को लाकर राम के सामने रख कर बोला–"आप इन्हें देख लीजिएगा!"

रामचन्द्रजी उन गहनों को देखते ही "हे सीते!" चिल्लाते गिर गये। आँसू बहाते निश्वास लेने लगे। उन्हों ने थोड़ी देर बाद स्वस्थ होकर लक्ष्मण से कहा–"लक्ष्मण! राक्षस जब सीताजी का अपहरण कर ले जा रहा था, तब सीताजी ने इन गहनों को मुलायम घास पर गिरा दिया होगा। इसीलिए वे गहने ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं।"

इसके उत्तर में लक्ष्मण ने रामचन्द्रजी से कहा–"मैं इन केयूरों तथा कुंडलों को पहचान नहीं सकता हूँ। किंतु प्रति दिन भाभी के चरणों में प्रणाम करते वक़्त दिखाई देनेवाली इन पाजेबों को पहचान सकता हूँ।"

लक्ष्मण के मुँह से ये शब्द सुनकर रामचन्द्रजी ने दीनतापूर्वक सुग्रीव से पूछा–"तुम्हारे देखते वह राक्षस सीताजी को किस दिशा में ले गया?"

व्यसने वार्थकृच्छ्रे वा,
भये वा जीवितांतके,
विमृशन्वै स्वया बुद्धया
धृतिमा न्नावसीदति ।। ।। १ ।।

[दुख, धन की हानि तथा प्राण का भय भी हो जाय तो भी साहसी व्यक्ति अपनी बुद्धि के द्वारा विचार करता है, किंतु दुखी नहीं होता ।]

बालिशस्तु नरो नित्यम्
वैक्लब्यम् योनुवर्तति,
स मज्जत्यवश श्शोके
भाराक्रान्तेव नौ जले ।। ।। २ ।।

[मूर्खतावश सदा दीन रहनेवाला व्यक्ति इस प्रकार दुख में डूब जाता है जैसे भारी नाव जल में डूब जाता है ।]

ये शोक मनुवर्तन्ते
न तेषाम् विद्यते सुखम्,
तेजश्च क्षीयते तेषाम्,
न त्वम् शोचितु मर्हसि ।। ।। ३ ।।

[सदा दुखी रहनेवाले व्यक्ति को कोई भी सुख प्राप्त नहीं होता । उनका पराक्रम नष्ट हो जाता है । इसलिए तुम दुखी मत होओ ।]

—वाल्मीकि

दुख

Photo by Nellai A. Ganapathy

पुरस्कृत परिचयोक्ति

मेरे आंगन है त्योहार

प्रेषक : राजेन्द्रकुमार

Photo by Prabhakar Mahadik
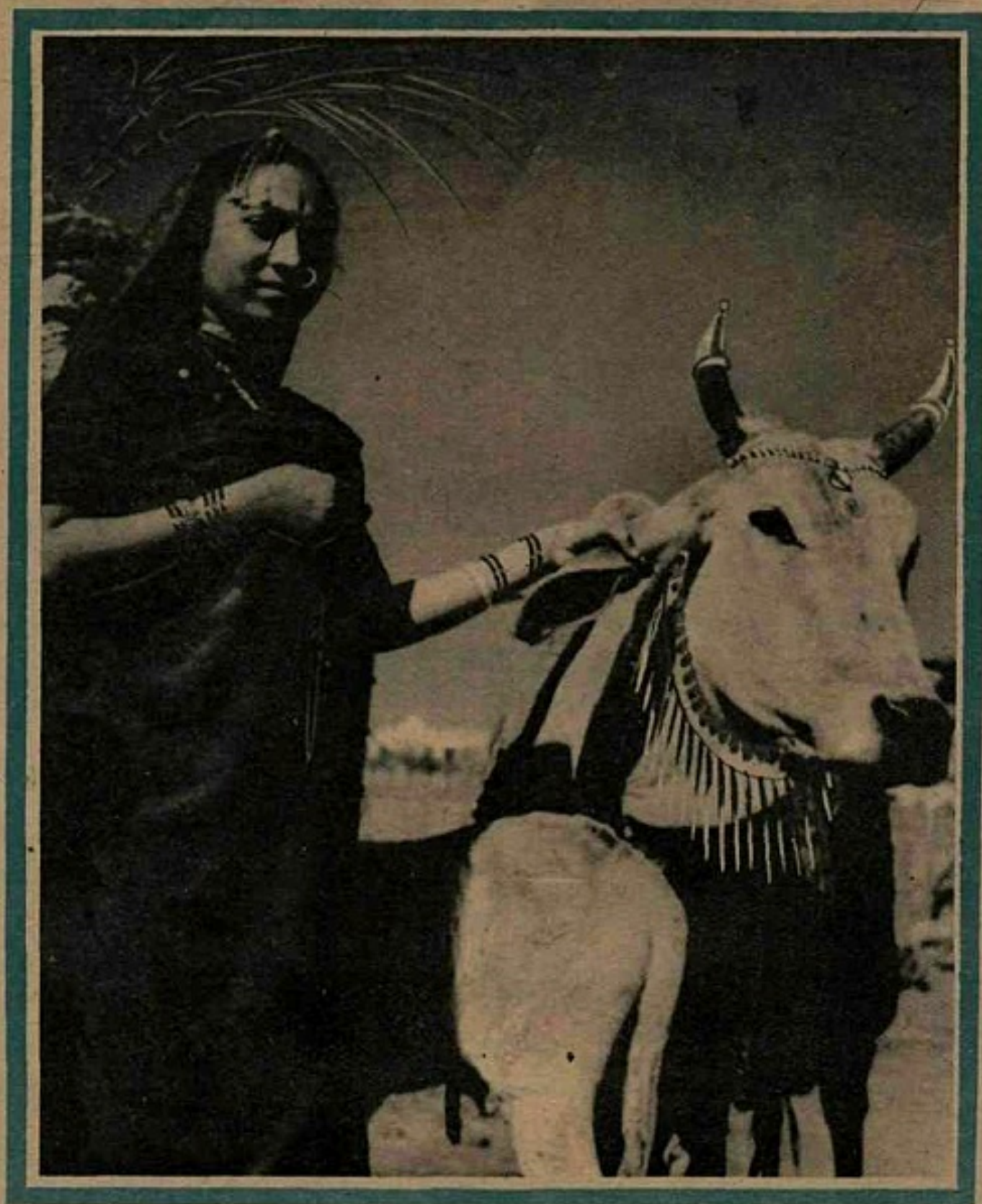
C/o कानेबालघर
बुलानाला, वाराणसी

मैं हूँ पूजन को तैयार

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

परिचयोक्तियाँ जनवरी १० तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मार्च के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा आवरण पृष्ठ:
डालिया

तीसरा आवरण पृष्ठ:
कुमुद

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3. Arcot Road, Madras-600026. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

फोरहॅन्स
दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट।

49F-203R-HIN

टिनोपाल® सर्वोत्तम सफ़ेदी के लिये

टिनोपाल®-एस
सिन्थेटिक और ब्लैंडिड वस्त्रों के लिये

टिनोपाल®
सूती वस्त्रों के लिये

®टिनोपाल सीबा-गायगी लि., स्विट्ज़रलैण्ड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.
सुहृद गायगी लि., पो. ऑ. बॉक्स ११०५०, बम्बई ४०० ०२०

Shilpi SGT. 1A/74 Hin

Photo by: V. MUTHURAMAN

WATER-LILY

मित्र-भेद